



संकल्प

प्रथम अंक



भारतीय खान ब्यूरो,
क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद



संपादक मंडल

प्रधान संपादक

पीयूष नारायण शर्मा

सह-संपादक

छाया ठाकुर

अनुक्रमणिका

आलेख	लेखक/रचनाकार सर्वश्री/श्रीमती
संदेश	बलविंदर कुमार, सचिव, खान मंत्रालय
संदेश	आर. के. सिन्हा, महानियंत्रक
संदेश	एस. टियू, खान नियंत्रक (द.आं.)
संदेश	पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी
संपादक की कलम से	पीयूष नारायण शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक
आवाज दे कहाँ है	पीयूष नारायण शर्मा
स्वच्छ भारत अभियान	ए. महावी, पुत्री- ए.वी.एन.रमेश कुमार, स.ख.भू.
व्यक्तित्व	छाया ठाकुर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
जल संरक्षण	स्नेहा मेनन पुत्री - पद्मिनी मेनन
दर्द-ए-हिमालय	अनिल कुमार सरवदे, आशुलिपिक ग्रेड-1
सकारात्मक सोच	संकलन - पद्मिनी मेनन, आशुलिपि ग्रेड
भारत में रत्न का इतिहास	देवदुर्लभ दास, व.ख.भू.एवं हिंदी संपर्क अधिकारी
भारत में महिलाओं की स्थिति	के. उमा देवी, अवर श्रेणी लिपिक
ये कैसी आजादी	तनुश्री दास, पत्नी - राजेश कुमार दास
बचपन	संकलन - पद्मिनी मेनन, आशुलिपि ग्रेड
सफलता के रहस्य	छाया ठाकुर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
सामान्यतः उपयोग किए जानेवाले 100 हिंदी शब्दों की सूची	राजेश कुमार दास, वरि. सहायक खान नियंत्रक
जीवन की अनमोल बातें	संकलन - अनिल कुमार सरवदे, आशुलिपि ग्रेड
उध्दरण	के.आर.वि.एस. आर.वि.एस.साई रितेश, पुत्र - के. उमा देवी
कविता	सरोज कुमार, कनिष्ठ सर्वेअर
स्लोगन	सी. एच. सुशीला, सहायक खनन भूविज्ञानी
सुविचार	संकलन - सरोज कुमार, कनिष्ठ सर्वेअर
पद	संकलन -3 अनिल कुमार सरवदे, आशुलिपिक ग्रेड-1
पद	संकलन - सरोज कुमार, कनिष्ठ सर्वेअर
निदा फाजली का शेर	संकलन - अनिल कुमार सरवदे, आशुलिपि ग्रेड
हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय में वर्ष 2015 - 16 के लिए हिंदी पखवाड़े का आयोजन - रिपोर्ट	छाया ठाकुर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय में वर्ष 2015 - 16 के लिए हिंदी प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक रिपोर्ट	छाया ठाकुर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
2015 - 16 के दौरान हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय में हुई विभिन्न गतिविधियां - झलकियां	छाया ठाकुर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

बलविन्दर कुमार, आईएएस
सचिव

BALVINDER KUMAR, IAS
Secretary



सत्यमेव जयते

भारत सरकार
खान मंत्रालय
शास्त्री भवन
डा. राजेन्द्र प्रसाद रोड
नई दिल्ली-110 001
Government of India
Ministry of Mines
Shastri Bhavan
Dr. Rajendra Prasad Road
New Delhi-110 001

07.06.2016

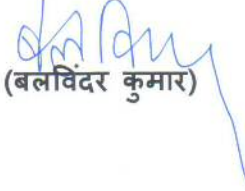


संदेश

भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद, की प्रथम हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' का विमोचन मन को छू जाने वाला एक प्रयास है। हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा के स्तर को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास सभ्यता, संस्कार और संस्कृति से जुड़ी है। एक सुदृढ़ राजभाषा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का यह छोटा किंतु उल्लेखनीय कदम इसी प्रतिबद्धता का परिचायक है।

यह पत्रिका कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम हो सकता है। आशा करता हूं कि यह पत्रिका इंद्रधनुष की तरह अपने रंग बिखरेगी एवं नई उंचाइयों को छुएगी।

संकल्प पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।


(बलविंदर कुमार)

रंजन कुमार सिन्हा
महानियंत्रक
Ranjan Kumar Sinha
Controller General



भारत सरकार
GOVERNMENT OF IN
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि भारतीय खान ब्यूरो का हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय अपनी प्रथम हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' का प्रकाशन करने जा रहा है। भाषा देश व सभ्यता और संस्कृति की वाहक होती है। इस दायित्व को हिंदी भाषा ने सफलता-पूर्वक निर्वह किया है। भारतीय खान ब्यूरो हिंदी के सतत प्रयोग एवं इसके प्रचार-प्रसार हेतु अत्यंत संवेदनशील है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय इस दिशा में भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में प्रभावी कार्य कर रहा है तथा प्रत्येक तिमाही नियमित रूप से कार्यशालाओं का आयोजन भी कर रहा है।

'ग' क्षेत्र में स्थित होने के उपरांत भी इस कार्यालय के कर्मियों का हिंदी के प्रति लगा प्रशंसनीय है। हम सभी के ये समेकित प्रयास मुझे यह विश्वास देते हैं कि हमारा संस्थान भारत सरकार द्वारा सुनिश्चित राष्ट्र निर्माण की संकल्पना में सक्रिय योगदान हेतु सदैव अग्रसर है। निःसंदेह यह पत्रिका विभिन्न प्रतिभा सम्पन्न रचना-धर्मियों को साहित्यिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करेगी तथा पाठकों में राजभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करेगी। मुझे विश्वास है कि 'संकल्प' का यह प्रथम अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बहुपयोगी होगा।

मैं गृह-पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और सभी लेखकों एवं संपादक मण्डल को उनके सार्थक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

रंजन कुमार सिन्हा
6/6/16
(आर. के. सिन्हा)

महानियंत्रक



टेली फोन/ Telephone : 080-23375365, 23375366 / 67
 फैक्स/ Fax : 080-23373287
 ई-मेल/ E-mail ID : comsz@rediffmail.com
 zo.bangalore@ibm.gov.in

भारत सरकार
 खान मंत्रालय
 भारतीय खान ब्यूरो
 GOVERNMENT OF INDIA
 Ministry of Mines
 INDIAN BUREAU OF MINES
 29, इंडस्ट्रीयल सबर्ब, II स्टेज
 29, Industrial Suburb, II Stage,
 तुमकूर रोड Tumkur Road
 गोरगुंटेपाल्य Goraguntepalya
 बेंगलूर -560 022 Bangalore - 560 022

संदेश

यह बहुत ही हर्ष की बात है कि क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद अपनी गृह पत्रिका 'संकल्प' का प्रकाशन कर रहा है. हिन्दी के प्रयोग की बढ़ती व्यापकता तथा हिन्दी के बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय महत्व को देखते हुए पत्रिका का प्रकाशन निःसंदेह अपने आप में एक सार्थक प्रयास है. गृह पत्रिका प्रकाशन की सबसे महत्वपूर्ण और उपयोगी बात है कि हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के माध्यम से हमें अपने स्तर पर देश की सेवा करने का अवसर प्राप्त हो रहा है. हिन्दी भाषा पूरे देश को एकसूत्र में बांधने का काम करती है एवं पत्रिका का प्रकाशन कर हैदराबाद के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने संवैधानिक दायित्व का परिचय दिया है.

मैं पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके इस प्रयास के लिए बधाई देता हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ.

(एस.टियू)

खान नियंत्रक (द.आं.) एवं
 अध्यक्ष कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूर



भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES

संदेश

हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय की गृह – पत्रिका 'संकल्प' के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम, समर्पण, लगाव और सम्मान को मूर्त रूप देने का यह अनुपम प्रयास 'गागर में सागर' भरने जैसा है।

विभाग के सदस्यों द्वारा लिखित रचनाओं के जरिए जहाँ एक ओर सदस्यों की कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का परिचय मिलता है, वहीं यह पत्रिका व्यक्तिगत स्तर के साथ ही सरकारी काम – काज में भी हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग का व्यवहारिक संदेश भी देती है।

पत्रिका प्रकाशन के इस अभियान में अपने परिश्रम, लगन, रचनाधर्मिता और प्रयासों का योगदान देने वाले सभी अधिकारी, कर्मचारी प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में अवश्य ही सफलता प्राप्त करेगी।

()
(जे. पी. के. जैन)
राजभाषा अधिकारी

संपादक की कलम से.....



एक संकल्पना ने जन्म लिया था, कुछ माह पहले, कार्यालय की प्रथम हिन्दी गृह पत्रिका के सृजन की । जिस प्रकार से प्रस्ताव को हाथों हाथ लिया गया, मेरे लिए आश्चर्य मिश्रित हर्ष का विषय था । मन से संदेह का तुषार तब भी छंट न पाया था कि अधिकांश इतर हिन्दी भाषी साथियों का कारवाँ क्या मंजिल तक पहुँचेगा । किन्तु सफलता तो लक्ष्य प्राप्ति में थी, संदेह और दुरुह सफर की सोच में नहीं । आवश्यकता थी एक सच्चे और ईमानदार प्रयास की और लक्ष्य को छूने के संकल्प की और अपनी इस संकल्पना को हम सभी साथियों ने एक नाम दिया 'संकल्प' ।

'संकल्प' एक संकलन है इस कार्यालय के सभी साथियों के दृढ विश्वास का, राजभाषा के प्रति उनके स्नेह की अभिव्यक्ति का, उनके समेकित प्रयासों का, उनके उत्साह और स्नेह का । एक छोटा सा कदम अपने देश की गौरवशाली राजभाषा के सम्मान स्वरूप । व्यक्तिगत रूप से मेरे सभी साथियों की सबसे गौरवशाली भेंट है ये मेरे लिए । आज मैं पूर्णतः असमर्थ पाता हूँ अपने आप को उन शब्दों के चयन में जो उनके प्रति मेरी कृतज्ञता को किंचित—मात्र भी अभिव्यक्त कर पाएँ । वे तो संभवतः इस बात से भी अनभिज्ञ हैं कि बचपन से लेखक बनने की कल्पना संजोए किसी व्यक्ति को अनायस ही संपादक बना डाला उनके इस संकल्प ने ।

मेरे इन उत्साही साथियों के स्नेह से सराबोर 'संकल्प' का प्रथम अंक आप सभी हिन्दी प्रेमियों को समर्पित है इस आशा के साथ कि भविष्य में निरंतर मिलने वाला आपका स्नेह और उत्साह—वर्धन टीम हैदराबाद के संकल्प को कभी डगमागाने नहीं देंगे ।

शुभेच्छु

पीयूष

आवाज दें कहां है



पीयूष नारायण शर्मा

गर्मियों की वही अलसाई सी सुबह। एक सुस्त सी अंगड़ाई के साथ बाहर बरामदे में कदम रखते ही सुबह की ठंडक ने मानो मुस्करा कर आलिंगन किया हो। सामने कॉलनी के बगीचे में कुछ जाने पहचाने चेहरे, जो सही मायने में बरसों बाद भी अन्जाने ही थे, कुछ तेज कदमों के साथ अपनी मॉर्निंग वॉक कम और मोबाइल पर मॉर्निंग टॉक ज्यादा कर रहे थे। दूध वाला अपने 40 साल पुराने बदरंग स्कूटर से घर-घर दूध पहुंचा रहा था और अखबार वाला अपनी मोपेड पर घर-घर अखबार फेंककर अपना प्रातःकर्म निपटाने में लगा था। हर सुबह निर्विकार भाव से अपने स्कूल बैग कंधे से लटकाए स्कूल जाने वाले बच्चे छुट्टियों के इस आलम में बाहर बगीचे में चहक रहे थे। सबकुछ एक बार-बार दिखाए जाने वाल चलचित्र सा जिसका हर दृश्य मस्तिष्क में जैसे उकेर दिया गया था। एक बार को लगा जैसे यूं ही सुबह से शाम होती है और जिन्दगी अपने को दोहराती है। कही तो कुछ बदला हो लगता ही नहीं।

यूं ही अन्यमनस्क सा दरवाजा खोल में बाहर घर के बगीचे में चला आया। तुलसी के पौधों के झुण्ड जिन्हें मैं नियमित रूप से पानी दिया करता था, सूखने लगे थे। हिलते हुए सूखे पत्तों की आवाज मानो कह रही थी कि, हमसे क्या गिला था कि बात करना तक छोड़ दिया। लगा मानो दिल में कही कोई टीस सी उठी हो। कुछ ऐसा ही तो हुआ था मेरी अपनी जिंदगी में भी। इतनी एक रस और यंत्रिकृत तो जिंदगी पहले कभी न थी। हर दिन इस तरह जीते जीते लगने लगा मानो कोई परिवर्तन है ही नहीं। हर दिन एक दोहराई जाने वाली कहानी की तरह है मगर इस मोड़ तक आते-आते कितना कुछ बदल गया है। उमंग से भरी जिंदगी, हर दिन की शुरुआत एक नई आशा के साथ एक नये विश्वास के साथ, न जाने वाले पल का गम न आने वाली अनिश्चितता की चिंता। बस अपने शानदार दोस्तों के साथ हर पल को भरपूर जी लेने की उत्कट इच्छा और हो भी क्यों न जब दोस्त ऐसे हों मानो ईश्वर का स्नेह। कुछ न होते हुए भी सबकुछ होने का एहसास क्या एक चक्रवृत्ती सम्राट भी महसूस कर पाता होगा।

जिंदगी की इस दौड़ में कुछ इतना आगे निकल आये कि सबकुछ जैसे बहुत पीछे छूट गया था या कहूं कि जिंदगी मुझे छोड़ आगे बढ़ गयी और मैं वही खड़ा रह गया। हर दिन को इकट्टा बटोर-बटोर कर जीने वाले सभी दोस्त अब दोस्तों के अलावा अधिकारी, पिता पति बन गये थे।

इतना कुछ बदल गया था मगर दोस्त थे कि वैसे ही थे। एक अर्से बाद भी मिले तो लगता था जिंदगी वहीं तो है, मानो ठहरी हुई, जस का तस। फिर भी एक हकीकत ये थी कि पहले पत्रों के माध्यम से होनेवाली बात आज मोबाइल तक सीमित हो गई थी और इतनी बात भी महिनो बाद ही होती थी। मगर वक्त और दूरी की धूल दोस्तों के स्नेह पर चढ़ ही नहीं पायी कभी।

अभी कोई तीन साडे तीन महीने पहले ही राजेश ने फोन किया था एक लम्बे अंतराल के बाद। मैं शास्त्री भवन में एक मीटिंग के लिए अंदर जा रहा था और उस छोटे से वार्तालाप को विराम मैंने ही दिया था ‘ ठीक है यार मैं तुझे थोड़ी देर में फोन करता हूं तब तसल्ली से बात करेंगे। ‘ ‘ चल ठीक है यार’ इतना ही कहकर उसने फोन रखा था। दूर कहीं से किशोर कुमार की स्वर लहरी हवाओं के पंख पर सवार गूंज रही थी ‘ ‘ आने वाला पल जाने वाला है, हो सके तो इसमें जिंदगी बिता लो पल जो ये जाने वाला है’ । अनायास ही मुझे राजेश की डायरी याद आ गयी जिसका हर पृष्ठ और हर शब्द इतना ताजा है मेरे मनोमस्तिष्क में लगता है अभी पढ़ ही रहा हूं सामने से। उसी डायरी में यह गाना पूरा पूरा लिखा था उसने। वो डायरी उसे प्रिय लगने वाले गीतों और हमारे बीच खेले जाने वाले क्रिकेट मैच का पूरा लेखा जोखा थी। उस डायरी के पृष्ठों में झांकने का प्रयास करता हूं तो पूरी जिंदगी मानो फिरसे दोहराने लगती है अपने आप को। मैं और राजेश दोनों ही बीकानेर की उस शानदार बिन्नाणी बिल्डिंग में पैदा हुए थे। जब वो कोई अढ़ाई वर्ष का रहा होगा और मैं चार का तब हम एक दूसरे का हाथ थाम घर से दूर शहर के व्यस्ततम के.ई.एम.रोड को पार कर एक पार्क में फव्वारा देखने जा बैठे थे।

एक साथ अपने पहले स्कूल शिशु-विहार से लौटते समय रेस लगाने की कवायद, बीकानेर की झुलसती गर्मी में पतंग लूटने और उड़ाने का निर्बाध आनंद, दीपावली के पटाखे, होली की मस्ती न जाने क्या क्या। साथ कुछ ऐसा कि जोधपुर एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज तक भी बना रहा। कल की ही तो बात सी लगती है जब वो आउट होने पर दोबारा बैटिंग न दिये जाने पर पूरी किट ले जाने की धमकी दिया करता था और हमें खेल जारी रखने के लिए उसकी बात रखनी पड़ती थी। अपने साथियों के जन्मदिन पर अक्सर उसकी डायरी से देखकर हम गाया करते थे। ‘ ‘ एक दिन बिक जायेगा माटी के मोल जग में रह जायेंगे प्यारे तेरे बोल’। बचपन के उन खूबसूरत पलों में किसे इस बात का अहसास था कि 22 अप्रैल के उस हादसे के बाद हम सभी दोस्त उसे उसके बोलो में ही दूँढते रह जायेंगे। अनायास ही मन एक अवसाद और घोर बेबसी के भंवर में मानो फंस कर रह गया। शायद ही कभी इस बात को स्वीकार कर पाऊंगा कि सच में वो हमारा होकर रह गया सदा के लिए क्योंकि अब किसी का तो हो ही न पायेगा वो।

एक छोटी गौरैया का जोड़ा तुलसी के आधे सूख चूके पौधों के झुंड में चहचहा रहा था। ये वही जोड़ा था जिसने घर के बाहर कोने में अपना घोंसला बनाया था। पिछले काफी समय से मैं बड़ी रुचि के साथ उनकी गतिविधियां देखा करता था। बड़े मनोयोग से बारम्बार तिनका-तिनका जोड़कर उन्होंने अपना घर बनाया था। ऐसा कई बार हुआ जब उनका अधूरा घर धराशाई हुआ था मगर उन्हें हताश होते मैंने कभी नहीं पाया। वे हर बार एक नये सिरे से शुरूआत करते थे। मैं बहुत प्रयत्न करने पर भी निराशा के चिन्ह तक ढूँढ नहीं पाया उनमें। फिर यकायक कुछ समय उनकी गतिविधियां कुछ शांत सी हो गयी ठीक उसी तरह जैसे कोई अपने घर में पहुंच कर निश्चित हो जाता है। एक सुबह उनकी आवाज कुछ ज्यादा सुनाई पड़ी बाहर आकर देखा तो दोनों पंछी मानो परेशान होकर इधर-उधर उड़ते नजर आये। घोंसले के ठीक नीचे एक क्षत-विक्षत अंडा गिरा पड़ा था। एक दुःख का भाव मेरे मन में उभरा और उस जोड़े के प्रति एक संवेदना जो मैं उनसे व्यक्त नहीं कर सकता था। मुझे लगा अब ये जोड़ा जिसे मैं अक्सर देखा करता था शायद इस जगह को छोड़ दे मगर अगले कुछ दिनों में देखा तो वो वहीं थे मानो ईश्वर के निर्णय को आत्मसात कर आगे बढ़ गये थे। अब उनमें से एक हमेशा घोंसले के पास बना रहता था जब दूसरा बाहर होता था और जब भी दूसरा लौटता था तो अपनी चोंच में कुछ लेकर जो उनके एक मात्र नवजात का आहार था। कई दिनों तक मैं देखता रहा किस प्रकार वो इकलौता उनके जीवन की धुरी बना रहा। न मालूम एक खोकर एक को पाने का अहसास कैसा रहा होगा उनके लिए।

फिर एक दिन लगा मानो दोनों आपस में झगड़ रहे हैं। आश्चर्य हुआ जब देखा वो जोड़ा अपने जीवन की एक मात्र उपलब्धी अपने बच्चे को चोंच मारकर घर से बेदखल करने में लगा था। ये क्रम कुछ समय तक चलता रहा और मैं मां-बाप की क्रूर हरकतों को आक्रोश के साथ देखता रहा। फिर उनकी क्रूरता के सामने तरुण ने हार स्वीकार करते हुए अपने पंख फड़फड़ाए, एक डगमगाती सी उड़ान भर अपना घर छोड़ सामने आ बैठा। जोड़ा अब भी उसके आस-पास ही मंडरा रहा था। लगा इतने से भी उनका दिल नहीं भरा था शायद उसे मार डालना चाहते थे। बेचारा अकेला बच्चा बगीचे में इधर-उधर उड़ते बैठते अपना बचाव करने में लगा था। ठीक से याद नहीं अगले दिन या उसके बाद तक बारम्बार प्रयत्न करने के बाद भी उसके अपने मां-बाप उसे अपनाने को तैयार नहीं थे। बेचारे अकेले पड़ गये उस बच्चे ने जैसे हथियार डाल दिये थे। किसी सहारे और अपनेपन की अंतिम आशा दम तोड़ चुकी थी। तब उसने शायद अंतिम बार गौर से अपने चारों तरफ देखा, अपने विश्वास और होंसले को तोला और फिर अपने पंखों में हवा भर एक अंजान गन्तव्य की ओर उड़ चला। इस बार उसकी उड़ान सधी हुई थी कहीं कोई डगमगाहट नजर नहीं आती थी। अनिश्चितता की ओर उसकी यह उड़ान निश्चित थी।

हवा का एक झोंका मेरे ख्यालों को झकझोर गया। सुबह की ठंडक में सूरज की गर्मी अब घुलने लगी थी। गौरय्या का घोंसला खाली था, शायद फिर नयी जिंदगी के इंतजार में। तुलसी के सूख चुके पौधों को भी शायद गर्मी की तपिश में पानी का इंतजार था तभी तो सूखी पड़ चुकी टहनियों ने हार नहीं मानी थी। कुछ नन्ही कोंपले अब भी फूट रही थीं मौसम की इस क्रूरता के बीच पानी की कुछ बूंदों की आस में । कुछ आशाएँ दम तोड़ती सी लगी अपने अंदर कहीं, निराशा के इस अंधकार में रोशनी की एक किरण की आस में।

अपने मन के अवसाद के परे कोई झांकता नजर आया मुझे । हमेशा मुस्कराता चित-परिचित चेहरा राजेश का जैसे कह रहा हो क्या यार कितने ढीले हो, चलो उठो तैयार तो जाओ निकलते हैं, जैसे हर शाम अपनी लूना का हार्न बजाकर वो नीचे खड़े-खड़े हमे बुलाते समय कहा करता था। आज तक मैं कहाँ मान पाया हूँ कि हमें छोड़ वो अकेला ही निकल पड़ा किसी अनिश्चित की ओर। इन तुलसी के पौधों की तरह हर हाल में जिंदा रहने की जिजीविषा लिए, आशा और विश्वास का दामन सदा थामे, कहाँ उड़ चला वो। देखा तो नहीं मगर जानता जरूर हूँ अलविदा कहते हुए भी उसकी मुस्कराहट उसके साथ ही रही होगी । मौत भी उससे जिंदगी छीन न पाई होगी और तब उसने उस नन्हे पंछी की तरह चारों ओर देखा होगा हर जाने पहचाने चेहरे और अहसास को अलविदा कहने से पूर्व। उसकी वो अंतिम या फिर वो पहली परवाज़ जिंदगी की ओर, जरा भी डगमाहट नहीं रही होगी उन पंखों में। पूर्ण विश्वास और आशा से सराबोर उस की वो उड़ान ले गई उसे वहाँ जहाँ धरती और आकाश मिलते हैं कहीं। उसकी डायरी में लिखे उस गीत की तरह साथी है तो मेरा साया, अकेला हूँ मैं.... ।

हवा के पंखों पर डूबते उतराते गीत के बोल कानो में फिर गूँज रहे थे हो सके तो इसमे जिंदगी बिता लो, पल जो ये जाने वाला है मैं अपने आप को समेटता सा घर में घुसा मानो सबकुछ पहले सा करने की सोच के साथ। हर सुबह वही तुलसी को पानी देना, वही मोबाइल पर मॉर्निंग टॉक करते जाने-अनजाने चेहरे, वही स्कूल जाते बच्चे, वही ऑफिस की भागदौड़ वाली नीरस जिंदगी सब कुछ वैसा ही तो है मगर फिर भी कितना कुछ बदल गया है इसके उस पार कुछ जिंदगियों के मायने बादल गए हैं किसी एक गुजरते पल के साथ। फिर भी एक वादा करता हूँ दोस्त हमेशा तैयार मिलूंगा तुझे, जैसा तू चाहता था। नहीं सूखने दूंगा इन तुलसी के पौधों को। नहीं आने पाएगा आक्रोश या विषाद का भाव फिर किसी पंछी को अपनी जिंदगी की उस पहली उड़ान पर मजबूर किए जाने पर। विश्वास दिलाता हूँ तुझे, फिर तैयार हूँ तेरा हाथ थाम पार्क में तेरे साथ उस फव्वारे तले जाने को और हाँ इस नीरस सी जिन्दगी में फिर किसी फोन की घंटी सुन ये कभी नहीं कहूंगा यार थोड़ी देर में तसल्ली से बात करूंगा। नहीं मालूम कब खत्म होगा इंतजार का ये

अंतहीन सिलसिला तेरे फोन की एक घंटी की घनघानाहट के साथ । थाम के बैठा हूं आशा का दामन कि तू तो यहीं है, जिंदगी से सराबोर, हम सभी में, मेरे भीतर कहीं, तेरे साथ गुजारे वो हजारों पल उतने ही जीवंत है आज तक । मन के किसी कोने में दम तोड़ती एक आशा जिंदा है तेरे फोन की एक घंटी के लिए और इस बार फोन बजा तो रखने नहीं दूँगा कभी।

स्वच्छ भारत अभियान



राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत की स्वतंत्रता से पहले अपने समय के दौरान "स्वच्छता आजादी से अधिक महत्वपूर्ण है" कहा था। वे भारत के बुरे और गन्दी स्थिति से अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने भारत के लोगों को साफ-सफाई और स्वच्छता के बारे में और इससे अपने दैनिक जीवन में शामिल करने पर बहुत जोर दिया था। हालांकि यह लोगों के कम रुचि के कारण असफल रहा। भारत की आजादी के कई वर्षों के बाद, सफाई के प्रभावी अभियान के रूप में इसे आरम्भ किया गया है और लोगों के सक्रिय भागीदारी चाहती है जिससे इस मिशन को सफलता मिले।

भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने जून 2014 में संसद को संबोधित करते हुए कहा कि "एक स्वच्छ भारत मिशन शुरू किया जाएगा जो देश भर में स्वच्छता, वेस्ट मैनेजमेंट और स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए होगा। यह महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर 2019 में हमारे तरफ से श्रद्धांजलि होगी"। महात्मा गांधी के सपने को पूरा करने और दुनिया भर में भारत को एक आदर्श देश बनाने के क्रम में, भारत के प्रधानमंत्री ने महात्मा गांधी के जन्मदिन (2 अक्टूबर 2014) पर स्वच्छ भारत अभियान नामक एक अभियान शुरू किया। इस अभियान के पूरा होने का लक्ष्य 2019 है जो की महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती है।

इस अभियान के माध्यम से भारत सरकार वेस्ट मैनेजमेंट तकनीकों को बढ़ाने के द्वारा स्वच्छता की समस्याओं का समाधान करेगी। स्वच्छ भारत आंदोलन पूरी तरह से देश की आर्थिक ताकत के साथ जुड़ा हुआ है। महात्मा गांधी के जन्म की तारीख मिशन के शुभारंभ और समापन की तारीख है। स्वच्छ भारत मिशन शुरू करने के पीछे मूल लक्ष्य, देश भर में शौचालय की सुविधा देना, साथ ही दैनिक दिनचर्या में लोगों के सभी अस्वस्थ आदतों को समाप्त करना है। भारत में पहली बार सफाई अभियान 25 सितंबर 2014 में शुरू हुयी और इसका आरम्भ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सड़क की सफाई से की गयी।

इस मिशन की सफलता परोक्ष रूप से भारत में व्यापार के निवेशकों का ध्यान आकर्षित करना, जीडीपी विकास दर बढ़ाने के लिए, दुनिया भर से पर्यटकों को ध्यान खींचना, रोजगार के स्रोतों की विविधता लाने के लिए, स्वास्थ्य लागत को कम करने, मृत्यु दर को कम करने, और घातक बीमारी की दर कम करने और भी कई चीजों में सहायक होंगी। स्वच्छ भारत अधिक पर्यटकों को लाएगी और इससे आर्थिक हालत में सुधार होगी। भारत के प्रधानमंत्री ने हर भारतीय को 100 घंटे प्रति वर्ष समर्पित करने के लिए अनुरोध किया है जोकि 2019 तक इस देश को एक स्वच्छ देश बनाने के लिए पर्याप्त है।

ए. महाती,
पुत्री – ए.वी.रमेश कुमार,
सहायक खनन भूविज्ञानी

व्यक्तित्व



व्यक्तित्व क्या है? व्यक्तित्व न ही व्यक्ति का बाह्य रूप यानी उसकी सुंदरता है और न ही उसका शरीर है। व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार का दर्पण है।

कभी व्यक्ति स्वभाव को उसका व्यक्तित्व माना जाता है। कभी व्यक्ति के शारीरिक और आंतरिक वृत्ति को व्यक्तित्व माना जाता है। परंतु मेरे विचार में व्यक्ति का व्यक्तित्व एक ऐसा पहलू है, जो समाज में उसकी पहचान बनाता है। व्यक्ति के जीवन में सफलता उसके अपने व्यक्तित्व से मिलती है। व्यक्ति के विचार, उसका समाज में व्यवहार, जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण आदि सभी व्यक्तित्व से जुड़े हैं। व्यक्ति का अन्य लोगों से कैसा व्यवहार होता है, लोगों के प्रति वह अपनी धारणाएं कैसी बनाता है, इतना ही नहीं आस-पास के लोग उस व्यक्ति के प्रति कैसे विचार रखते हैं, इससे भी व्यक्तित्व की पहचान होती है। यदि कोई व्यक्ति आस-पास के वातावरण को सहजता से अपना लेने की और उसमें घूल-मिल जाने की क्षमता रखता है तो वह विशाल व्यक्तित्व वाला होता है।

अच्छे व्यक्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को पहचाने, अपनी अच्छाइयों और बुराइयों का ईमानदारी से विश्लेषण करें। इससे स्वयं की कमियों का पता चलेगा, जिससे हम उन कमियों को पूर्ण कर प्रगति की ओर अग्रसर होंगे और इससे हमारे जीवन में परिवर्तन भी हो सकता है। व्यक्ति की सफलता उसके व्यक्तित्व की सकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है।

आत्म अनुशासन व्यक्तित्व का सबसे बड़ा गुण होता है। आत्म अनुशासन से ही व्यक्तित्व का विकास होता है। सभी कार्यों को समय पर निपटाने के साथ अपनी प्रवृत्तियों, अपने कार्यों और दिनचर्या, आदि पर नियंत्रण रखना चाहिए। इतना ही नहीं आत्म अनुशासन के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी भावनाओं, आवेगों, क्रोध,

ईर्ष्या, द्वेष, लालच, आदि पर उसका पूर्णत नियंत्रण होना आवश्यक है। इसके लिए व्यक्ति को स्वयं की अच्छाइयों और बुराइयों की जानकारी होनी चाहिए जिससे वह अपनी बुराइयों की जानकारी होनी चाहिए जिससे वह अपनी बुराइयों को दूर कर अच्छाइयों को विकसित कर सके। अच्छे व्यक्तित्व का यह भी गुण है कि समाज में लोगों की भावनाओं, अपेक्षाओं के प्रति संवेदनशील रहे। किसी से किसी की बुराई न करे। सभी से स्नेहपूर्वक रहें। व्यक्ति का व्यवहार सदैव संतुलित एवं पारदर्शी होना चाहिए। दैनिक जीवन में व्यक्ति की सफलता उसके अपने व्यवहार पर ही निर्भर होती है। व्यक्ति का व्यवहार ही उसके व्यक्तित्व का आइना होता है। जीवन में व्यक्ति को उसके व्यवहार के अनुसार ही स्थान प्राप्त होता है। व्यक्ति अपने मन में किसी भी तरह की हीन भावना को जन्म न दें, इससे उसके व्यक्तित्व में कमी नहीं आएगी, व्यक्ति का दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक होना चाहिए, जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा। यदि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व विशेष के प्रति हमेशा सजग रहे तो वह अपने जीवन में मुश्किलों को पार कर सफलता प्राप्त अवश्य करेगा।

////////////////////////////////////

छाया ठाकुर
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक



जल संरक्षण

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जल हमें और दूसरे जीव-जन्तुओं को धरती पर जीवन प्रदान करता है। धरती पर जीवन को जारी रखना बहुत जरूरी है। बिना पानी के, किसी भी ग्रह पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। पृथ्वी पूरे ब्रह्माण्ड का एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ पानी और जीवन आज की तारीख तक मौजूद है। इसलिये, हमें अपने जीवन में जल के महत्व को दरकिनार नहीं करना चाहिये और सभी मुमकिन माध्यमों के प्रयोग से जल को बचाने की पूरी कोशिश करनी चाहिये। पृथ्वी लगभग 71% जल से घिरी हुई है हालांकि, पीने के लायक बहुत कम पानी है। पानी को संतुलित करने का प्राकृतिक चक्र स्वतः ही चलता रहता है जैसे वर्षा और वाष्पीकरण। हालांकि, धरती पर समस्या पानी की सुरक्षा और उसे पीने लायक बनाने की है जोकि बहुत ही कम मात्रा में उपलब्ध है। जल संरक्षण लोगों की अच्छी आदत से संभव है।

हमें जल को क्यों बचाना चाहिये -

हमें जल को क्यों बचाना चाहिये का उत्तर जानने के लिये, पहले पानी के महत्व को जानना चाहिये अर्थात् हमारे जीवन में जल कितना कीमती है। बिना ऑक्सीजन, पानी और भोजन के जीवन संभव नहीं है। लेकिन इन तीनों में सबसे जरूरी जल है। अब प्रश्न उठता है कि कितना प्रतिशत शुद्ध जल धरती पर मौजूद है।

आंकड़ों के अनुसार, ऐसा आकलन किया गया है कि 1% से भी कम पानी पृथ्वी पर पीने के लायक है। अगर हम पीने के पानी और विश्व की जनसंख्या का पूरा अनुपात निकालें, ये होगा, हर दिन पानी के 1 गैलन पर एक बिलियन से भी अधिक लोग पूरी दुनिया में जी रहे हैं। ऐसा भी आकलन किया गया है कि लगभग 3 बिलियन से भी ज्यादा लोग 2025 तक पानी की कमी से जूझेंगे।

लोग अब स्वच्छ जल का महत्व समझना शुरू कर चुके हैं हालांकि पूरी तरह से जल को बचाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। पानी को बचाना एक अच्छी आदत है और जीवन को धरती पर जारी रखने के लिये हरेक को अपना सबसे बेहतरीन प्रयास करना चाहिये। कुछ साल पहले, कोई भी दुकान पर पानी नहीं बेचता था हालांकि अब समय बहुत बदल चुका है और अब हम देख सकते हैं कि सभी जगह शुद्ध पानी का बॉटल बिक रहा है। पूर्व में, पहले लोग पानी को दुकानों में बिकता देख आश्चर्यचकित हो गये थे हालांकि अब, अपने अच्छे स्वास्थ्य के लिये 20 रुपये प्रति बॉटल या उससे अधिक देने के लिये तैयार हैं। हम साफतौर पर महसूस कर सकते हैं कि आने वाले भविष्य में पूरी

दुनिया में स्वच्छ जल की अधिक कमी होगी। नीचे दिये कुछ तथ्यों के अनुसार पता चलता है कि आज हमारे लिये साफ पानी कितना मूल्यवान बन चुका है:

- बहुत सारे लोग जो पानी से होने वाली बीमारियों के कारण मर रहे हैं, 4 मिलियन से ज्यादा हैं।
- साफ पानी की कमी और गंदे पानी की वजह से होने वाली बीमारियों से सबसे ज्यादा विकासशील देश पीड़ित हैं।
- एक दिन के समाचार पत्रों को तैयार करने में लगभग 300 लीटर पानी खर्च हो जाता है, इसलिये खबरों के दूसरे माध्यमों के वितरण को बढ़ावा देना चाहिये।
- पानी से होने वाली बीमारियों के कारण हर 15 सेकेण्ड में एक बच्चा मर जाता है।
- पूरे विश्व में लोगों ने पानी के बॉटल का इस्तेमाल शुरू कर दिया है जिसकी कीमत \$60 से \$80 बिलियन प्रति साल है।
- भारत, अफ्रीका और एशिया के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को साफ पानी के लिये लंबी दूरी (लगभग 4 कि.मी. से 5कि.मी.) तय करनी पड़ती है।
- भारत में पानी से होने वाली बीमारी के वजह से लोग ज्यादा पीड़ित हैं जिसकी वजह से बड़े स्तर पर भारत की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।

घर का कोई सदस्य घरेलू कार्यों के लिये रोज लगभग 240 लीटर पानी खर्च करता है। एक चार सदस्यों वाला छोटा मूल परिवार औसतन 960 लीटर प्रतिदिन और 350400 लीटर प्रतिवर्ष खर्च करता है। रोजाना पूरे उपभोग का केवल 3% जल ही पीने और भोजन पकाने के लिये उपयोग होता है बाकी का पानी दूसरे कार्यों जैसे पौधों को पानी देना, नहाना, कपड़े धोना आदि में इस्तेमाल होता है।

जल बचाव के कुछ सामान्य नुस्खे -

- सभी को अपनी खुद की जिम्मेदारी को समझना चाहिये और पानी और भोजन पकाने के अलावा पानी के अधिक उपयोग से बचना चाहिये।
- अगर धीरे-धीरे हम सभी लोग गार्डन को पानी देने से, शौच में पानी डालने से, साफ-सफाई आदि के लिये पानी की बचत करने लगें, प्रति अधिक पानी का बचत संभव होगी।
- हमें बरसात के पानी को शौच, लाँड्री, पौधों को पानी आदि के उद्देश्य लिये बचाना चाहिये।
- हमें बरसात के पानी को पीने और भोजन पकाने के लिये एकत्रित करना चाहिये।
- हमें अपने कपड़ों को केवल धोने की मशीन में धोना चाहिये जब उसमें अपनी पूरी क्षमता तक कपड़े हो जाएँ। इस तरीके से, हम 4500लीटर पानी के साथ ही बिजली भी प्रति महीने बचा लेंगे।

- फुहारे से नहाने के बजाय बाल्टी और मग का प्रयोग करें जो प्रति वर्ष 150 से 200लीटर पानी बचायेगा।
- हमें हर इस्तेमाल के बाद अपने नल को ठीक से बंद करना चाहिये जो 200 लीटर पानी हर महीने बचायेगा।
- होली त्योहार के दौरान पानी के अत्यधिक इस्तेमाल को कम करने के लिये सूखी और सुरक्षित को बढ़ावा देना चाहिये।
- जल बर्बादी से हमें खुद को बचाने के लिये अपने जीने के लिये जल की एक-एक बूंद के लिये रोज संघर्ष कर रहे लोगों की खबरों के बारे में हमें जागरूक रहना चाहिये।
- जागरूकता फैलाने के लिये हमें जल संरक्षण से संबंधित कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिये।
- गर्मी के मौसम में कूलर में अधिक पानी बर्बाद न होने दें, केवल जरूरत भर का ही इस्तेमाल करें।
- हमें पाइप के द्वारा लॉन, घर या सड़कों पर पानी डालकर नष्ट नहीं करना चाहिये।
- पौधारोपण को वर्षा ऋतु में लगाने के लिये प्रेरित करें जिससे पौधों को प्राकृतिक रूप से पानी मिलें।
- हमें अपने हाथ, फल, सब्जी आदि को खुले हुए नल के बजाय पानी के बर्तन से धोने की आदत बनानी चाहिये।
- हमें दोपहर के 11 बजे से 4 बजे तक पौधों को पानी देने से बचना चाहिये क्योंकि उस समय उनका वाष्पीकरण हो जाता है। सुबह या शाम के समय पानी देने से पौधे पानी को अच्छे से सोखते हैं।
- हमें पौधरोपण को बढ़ावा देना चाहिये जो सुखा सहनीय हो।
- हमें पारिवारिक सदस्यों, बच्चों, मित्रों, पड़ोसियों और सह-कर्मचारियों को सकारात्मक परिणाम पाने के लिये अपने अंत तक यही प्रक्रिया अपनाने या करने के लिये प्रेरित करना चाहिये।

संकलन : स्नेहा मेनन

पुत्री पद्मिनि मेनन

दर्द-ए-हिमालय



बंधुओं! अभी हाल ही में (9 सितम्बर) को हमारे पर्यावरणीयविदों ने “हिमालय-दिवस” मनाने का निश्चय किया है. हिमालय युगों-युगों से भारत के गौरवमयी इतिहास की गाथा गाते हुए अपने स्वाभिमान की रक्षा कर रहा है. परन्तु अब लगता है भारत की शर्मनाक घटनाओं और

भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण हिमालय भारत से दूरी बना रहा है. वैज्ञानिकों का मानना है कि हिमालय 5-6 सेंटीमीटर प्रतिवर्ष वर्ष उत्तर की ओर खिसक रहा है.

हिमालय एक परिचय-

हिमालय किसी परिचय का मोहताज नहीं, फिर भी अपना कर्तव्य समझकर लिख रहा हूँ. हिमालय संस्कृत के हिम तथा आलय (हिम+आलय= हिमालय) दो शब्दों से मिल कर बना है, जिसका शब्दार्थ **बर्फ का घर** होता है। हिमालय नेपाल और भारत का धरोहर है। हिमालय की आयु लगभग 50-60 मिलियन वर्ष है.

हिमालय एक विशाल पर्वत श्रृंखला है. संसार की अधिकांशतः ऊँची पर्वत चोटियाँ हिमालय में ही स्थित है, विश्व के 100 सर्वोच्च शिखरों में हिमालय की अनेक चोटियाँ हैं, विश्व का सर्वोच्च शिखर **सागर माथा (माउंट एवरेस्ट)** हिमालय का ही एक शिखर है. हिमालय में 100 से ज्यादा पहाड़ हैं, जो 7200 मीटर में फैले हुए हैं. ये सभी पहाड़ छह देशों (**भारत, नेपाल, भूटान, तिब्बत और पाकिस्तान**) की सीमाओं को छूते हैं. हिमालय अनेक पवित्र नदियों (गंगा, ब्रम्हपुत्र) का उद्गम स्थल है. हिमालय रेंज में 15 हजार से ज्यादा **ग्लेशियर** हैं, जो 12 हजार वर्ग किलोमीटर में फैले हुए हैं. 70 किलोमीटर लंबा **सियाचीन ग्लेशियर** विश्व का दूसरा सबसे लंबा ग्लेशियर है। इसमें कई धार्मिक स्थल भी हैं. जैसे- हरिद्वार, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गोमुख, देव प्रयाग, ऋषिकेश, माउंट कैलाश, मनसरोवर तथा अमरनाथ आदि. सिखों का प्रसिद्ध तीर्थ हेमकुंड साहिब और कई बौद्धमठ भी यहाँ स्थित हैं.

हिमालय के अन्य नाम-

हिमालय को कई नामों से जाना जाता है, जिनमें प्रमुख नाम है-

सागरमाथा, हिमाल, अन्नपूर्णा, गणेश, लांगतंग, मानसलू, रोलवालिंग, जुगल, गौरीशंकर, कुंभू, धौलागिरी और कंचनजंघा आदि.

हिमालय की महत्ता-

हिमालय की महत्त्व के बारे में जितना कहा जाये कम है. इसकी महत्ता का अनुमान इसके परिचय से ही लगाया जा सकता है. हिमालय प्राकृतिक सुषमा और संस्कृतिक वैभव का घर है. इसकी गगन चुम्बी चोटियाँ सम्पूर्ण भारत भूमि को एशिया की ठंडी हवाओं से सुरक्षित रखती हैं और उत्तर भारत में वर्षा का कारण बनती हैं. यहाँ के हिमनदों से निलकर गंगा और ब्रम्हपुत्र जैसी नदियाँ भारत भूमि को सिंचित करती हैं. हिमालय की विस्तृत पर्वत श्रृंखला भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर में एक प्राकृतिक सीमा का निर्माण करती हैं. इसकी चोटियाँ दुश्मन के लिये एक चुनौती बनकर भारत को उत्तरी घुसपैठ से सुरक्षित रखती हैं. वहीं आयुर्वेद के सम्बंधित तमाम जड़ी-बूटियाँ हिमालय पर पायी जाती हैं. ये आयुर्वेद आधारित अद्वोगों का आधार है.

कई कविओं ने भी अपने काव्य रचना में हिमालय का सहारा लिया है. जैसे-

कवि प्रदीप जी ने लिखा- “आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है, दूर हटो ये दुनियां वालों हिन्दुस्तान हमारा है.”

जय शंकर प्रसाद जी ने भी अपनी कविताओं में स्वतंत्रता का आह्वान करते हुए लिखा है- “हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती.”

रामधारी सिंह ‘दिनकर’ जी ने भी लिखा है-

“मेरे नगपति! मेरे विशाल!

साकार, दिव्य, गौरव विराट, पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल!

मेरी जननी के हिम-किरीट! मेरे भारत के दिव्यभाल!”

हिमालय की व्यथा-

ऐसे में यदि हिमालय के भविष्य की बात करें, तो वैज्ञानिकों का मानना है कि, हिमालय 5-6 सेन्टीमीटर प्रतिवर्ष उत्तर दिशा की ओर खिसक रहा है। आने वाले दो सौ मिलियन साल में यह शिफ्ट हो सकता है। परन्तु इस अवधि से पहले भी कई संकट आ सकते हैं। इस दौरान यहाँ उथल-पुथल हो सकती है, एक्टिव होने के कारण हिमालयी क्षेत्रों में छोटे-बड़े भूकंप आते रहेंगे। चट्टानें कमजोर होने के चलते भू-स्खलन का खतरा बना रहेगा। ग्लेशियरों के पिघलने की दर बढ़ सकती है। नदियों के सूख जाने का खतरा पैदा हो सकता है। छोटे ज्वालामुखी फट सकते हैं। लाखों साल के इस बदलाव में समुद्र के भी जगह छोड़ने की आशंका है। वाडिया हिमालय भू-विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों का आकलन है कि हर 300-400 साल में “लिटिल आइस एज” आती है। भरी मात्रा में बर्फबारी होती है। यह चक्र स्वयं को दोहराता रहता है। ऐसा ही आगे भी चलेगा।

हिमालय की हुकूमत को बचाने के उपाय-

जहाँ एक ओर हिमालय खतरे में है वहीं उस पर निवास करने वाली जन जातियां भी खुद को असुरक्षित महसूस कर रही हैं। यँ तो हिमालय समस्या के लिए कुछ हद तक प्रकृति ही जिम्मेदार है, परन्तु अधिकांशतः जिम्मेदारी हमारी है। पर्यावरण प्रदूषणों और जंगलों के अंधा-धुंध कटाव के कारण हिमालय की समस्या का प्रादुर्भाव हुआ है।

संकलन - अनिल कुमार सरवदे
आशुलिपिक गेड.।

सकारत्मक सोच



कुछ लोगों को अपने ज्ञान और पद का बहुत घमंड होता है और अपने आगे वे किसी को कुछ नहीं समझते पर सच सिर्फ इतना है कि दुनिया के हर प्राणी और हर वस्तु से हमें कुछ ना कुछ सीखने को मिल सकता है. हम कभी भी यह दावा नहीं कर सकते कि हम सर्व ज्ञानी है और हमें तो सब कुछ आता है. इसलिए चाहे हम जितने भी बड़े हो जाएँ पर रहते हमेशा एक विद्यार्थी ही हैं, जिसका सीखना जीवन पर्यंत जारी रहता है.

हमारे जीवन से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हर व्यक्ति, हमारे जीवन में घटित होने वाली हर घटना, यह प्रकृति, इसके सभी प्राणी और पेड़-पौधे बल्कि यूँ कहूँ कि संसार की हर वस्तु हमें कुछ ना कुछ सिखाती ही हैं. हम सभी ने बचपन में चींटी और मकड़ी की कहानी सुनी है. एक चींटी ऊँचाई पर चढ़ते समय कई बार गिरती है, लेकिन वह हार कर कभी नहीं ठहरती बल्कि अपनी कोशिश अनवरत जारी रखती है. तात्पर्य यह है कि एक चींटी और मकड़ी से मिली सीख भी हमारे जीवन की दिशा बदलने का मादा रखती है. अतः हमें कभी भी खुद को इतना महान और बड़ा नहीं समझ लेना चाहिए कि सीखने का हर द्वार हम यह सोचकर बंद कर दें कि हमें तो सब कुछ आता है.

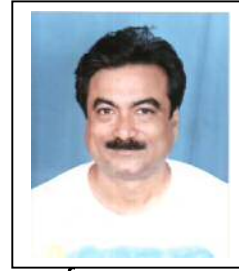
कई बार ऐसा होता है कि कोई हमारे विचार से सहमत नहीं होता और हमारा विरोध करता है, पर इसे सकारात्मक रूप से लिया जाना चाहिए ना कि यह सोचना चाहिए कि विरोध करने वाला तो हमारा दुश्मन है और हमसे जलता है. हो सकता है वह हमारा दुश्मन भी हो और हमसे ईर्ष्या भी रखता हो, पर यह भी जरूरी नहीं कि उसकी कही हर बात गलत ही हो.

रावण के बारे में हम सबने पढ़ा, सुना और देखा है. वह महाज्ञानी था लेकिन उसके एक गलत विचार से सारी लंका का सर्वनाश हो गया. उसके शुभचिंतकों ने उसे बहुत समझाया पर अपने अहम् में वह इतना अंधा हो गया कि उसने किसी की नहीं सुनी. महान से महान ज्ञानी व्यक्ति का भी कोई विचार गलत हो सकता है. इसलिए कभी भी अहम् में इतना अंधा नहीं होना चाहिए कि जो हमारा समर्थन करे वे हमें हमारे दोस्त और जो विरोध करे, वे हमें हमारे दुश्मन नज़र आने लगे.

अगर कोई विचार सचमुच अच्छा है और ग्रहण करने योग्य है तो उसका खुले दिल से स्वागत करना चाहिए. अपनी सोच को परिष्कृत करने का मार्ग हमेशा खुला रखना चाहिए और इस रास्ते में हमारा अहम् आड़े नहीं आना चाहिए. विचारों के विरोध और समर्थन को व्यक्ति का विरोध या समर्थन ना बनने दें, क्योंकि गलती तो कभी भी किसी से भी हो सकती है और कभी कोई सही भी हो सकता है. अतः मतभेद कभी मनभेद नहीं बनने चाहिए.

संकलन- पद्मिनि मेनन
आशुलिपिक ग्रेड.।

भारत में रत्न का इतिहास



- देव दुर्लभ दास, व.ख.भू.
अनुवाद - छाया ठाकुर

भारत प्राचीन काल में समृद्ध विरासत और संस्कृति वाला देश जाना जाता था, उसमें खनन का भी इतिहास रहा है। 20 वीं सदी तक यह इतिहास अधिकतर मणि(Gem) सामग्री पर केंद्रित है। भारत उन दिनों कई सदियों के लिए 'ब्राजील' था, यूरोपीय समाज गहनों में लीन था इसलिए निरंतर प्रवाह में सुंदर रत्न जड़ने का कार्य आसान था। भारतीय रत्नों का खनिज के खनन हेतु कार्य किया जाता था, झूओलिटिक गुहा को खनिजों के लिए नहीं बल्कि फलने-फुलने के लिए अग्रणी तौर पर उसकी सराहना की जाती थी और इसी कारण संक्षेप में, यह समीक्षा करने योग्य है।

हीरा शायद भारत का सबसे प्रसिद्ध प्रारंभिक रत्न उत्पाद है, भारत का हीरा उद्योग छठी और सातवीं शताब्दी पूर्व शुरू किया गया था। यह अपनी तरह का पहला उद्योग था और इस पत्थर पर तब तक अपना एकाधिकार बनाएं रखा जब तक 1727 में ब्राजील में हीरे के भंडार की खोज हुई। ऐतिहासिक महान हीरे मूल रूप से अधिकतर भारत में हैं और तीन बड़े-बड़े इलाकों में व्यापक रूप में पाए जाते हैं। गोलकोंडा जो तेलंगाना राज्य के हैदराबाद जिले में है। बुंदेलखंड क्षेत्र के पन्ना में और आंध्रप्रदेश के महानंदी और गोदावरी घाटियों में पाएं जाते हैं।

पन्ना के चारों ओर कुछ किम्बरलाइट पाइपों के स्थान को छोड़कर पत्थर मुख्य रूप से जलोढ़ निक्षेपों में पाएं जाते हैं और विशेष रूप से समूहों में और परत से युक्त दुरुस्त, काले मिर्च के दाने के आकार में हल्के नीले, हरे, और बेरंग, विभिन्न प्रकार के संशोधित रूप में पाएं जाते हैं। बड़िया मुगल हीरा, 1650 में कृष्णा नदी के तट पर गुंटुर क्षेत्र में पाया गया, यह सबसे बड़ा हीरा भारत में प्रथम पाया गया। इसे काटने से पूर्व इसका वजन 787/5 कैरेट में बताया जाता था। पन्ना से हीरों के क्रिस्टल को आम तौर पर (hexahedrons) के रूप में, उनकी आकृति विज्ञान में असामान्य

रूप से परिपूर्ण होने के लिए जाना जाता है (Catheon) एक छः पक्षीय पिरामिड समान उसके अपने चेहरे के साथ बढ़ा हुआ है)। दुर्भाग्य से भारतीय हीरा क्षेत्र इतना पुराना है कि लंबे समय तक इस पर श्रम किया गया फिर भी उनके उत्पादन आज नगण्य है।

400 ईसा पूर्व बेरिल का भारत में उत्पादन हो रहा था। स्ट्रबो का उल्लेख (45 बी.सी. - 21 ए.डी.) मणि के रूप में किया गया था, बेरिल्स का प्रयोग भारत में पीने के कप, आभूषण के रूप में किया जाता था और अपने समय में, प्लीनी से संबंधित एक्वामरीन का प्रमुख स्रोत दुनिया में भारत को माना जाता था। सन् 1800 के प्रारंभ में महीन क्रिस्टल तमिलनाडु के कोयम्बतुर जिले के पाडुर गांव में पाए गए। काटने के प्रयोजन के लिए असाधारण गहरे नीले एक्वामरीन मणि सामग्री का उत्पादन उसी क्षेत्र में करूर से किया जाना जारी रखा गया है किन्तु संग्रहणीय क्रिस्टल कुछ और दूरी के बीच किया जाता है। हालांकि, करूर से लगभग पारदर्शी दो उल्लेखनीय एक्वामरीन क्रिस्टल, लंबाई में एक फिट और परिधि में अधिक से अधिक 3 इंच से भी और अधिक बड़े क्रिस्टल को टक्सन के मणि और खनिज शो में प्रदर्शित किया गया। अच्छे नमूना गुणवत्ता के एक्वामरीन के निक्षेप और उसकी अन्य जातियां, जो आज उपलब्ध है उसकी खोज पाकिस्तान द्वारा 1915 में शीगर घाटी में दासू गांव के पास की गई।

गार्नेट की आज की तुलना में प्राचीन काल में अधिक सराहना की जाती थी। गार्नेट और सोने के कंठहार की सोच भारत से आयी जो कि मध्य साम्राज्य (2040-1640 बी.सी.) के मिस्त्र के शव में पाई गई थी । आज भी, किसी भी बड़े-बड़े मणि और खनिज शो में भारतीय व्यापारियों और आयातकारों द्वारा असीम संख्या में सस्ते प्रतीत होने वाले गार्नेट और मोती के हार उपलब्ध कराए जाते हैं, परंतु दुर्भाग्य से कोई उत्कृष्ट क्रिस्टल के नमूने दिखाई नहीं देते।

किसी समय में, रूबी और नीलमणि भारत के प्रसिद्ध उत्पादों में से थे, परंतु ऐसा लगता कि, आधुनिक बर्मा (म्यांमार) की स्थापना से पूर्व मोगोक पत्थर का भूभाग भारत का हिस्सा था। कश्मीर क्षेत्र में भी उत्कृष्ट नीलमणि क्रिस्टल का उत्पादन किया गया था, उनमें से कई संग्राहक गुणवत्ता के थे। आज के आधुनिक समय में कई उत्कृष्ट नमूने प्राप्त हुए, जैसे, मैसूर के दक्षिण-पूर्व से

कुछ साठ किलोमीटर की दूरी पर दस्यु-ग्रस्त बुडिपडगा जंगल में गैर-मणि, गुणवत्ता के रूबी क्रिस्टल के निक्षेप पाए गए।

सन 1800 के उपरान्त भारत में धातु निक्षेप (सीसा, लोहा, चांदी, सोना, जस्ता, क्रोमियम, तांबा, टायटानियम, टैंटलम, मँगनीज, बेरिलियम, लिथियम) का खनन किया गया लेकिन अगर क्रिस्टल पाये गये थे तो स्पष्ट रूप से उसे सहेजा नहीं गया था। फॉस्फेट, फ्लोराइड, मँगनेसाइट, नमक, शोरा, पेट्रोलियम और कोयला सहित अन्य खनिज उत्पादों का भी खनन किया गया। बाजार पर इन नमूनों में से किसी भी सार्थक मात्रा के उपज को छोड़कर, पेगमाटिटिक मोनाझाइट का आश्चर्यजनक रूप से बड़ी मात्रा में इसका उल्लेख नहीं है। (ब्राउन 1936)

 =====

भारत में महिलाओं की स्थिति



प्राचीन भारत में विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में महिलाओं की स्थिति को विरोधाभासी बयानों की वजह से जटिल बना दिया गया है। जबकि कुछ ग्रंथों में महिलाओं को पुरुष की बराबरी का दर्जा देकर उनकी स्थिति का वर्णन किया गया है। कुछ ग्रंथों में सकारात्मक गुणों का वर्णन किया गया है।

यही कारण है कि भारत में महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन, समाजशास्त्रीयों ने कई समस्याओं को प्रस्तुत किया है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास के कई धार्मिक ग्रंथों में महिलाओं को 'देवी' का दर्जा दिया गया है। इन ग्रंथों में महिलाओं को अर्धांगिनी का दर्जा दिया गया था लेकिन वास्तविक रूप में वह पुरुष पर अधीन के स्थिति में थी। उसे कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे।

यह आम तौर पर देखा जाता है कि शक्ति और जीवन-परिवार, समाज, धर्म और राजनीति के सभी क्षेत्रों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम दर्जा दिया जाता था। यहां तक ​​हालात खराब थे कि वह शादी होने तक माता-पिता, विवाहित जीवन के दौरान पती द्वारा संरक्षित और बाद में बेटे द्वारा संरक्षित थी। उसे पैसे खर्च करने या निवेश करने की भी अनुमति नहीं थी। उसका अपना खुद का कोई अस्तित्व नहीं था। भारत में महिलाओं की दयनीय स्थिति के लिए ब्राम्हण, ग्रंथ द्वारा बनाये गये कठोर नियम भी जिम्मेदार थे।

ऋग्वेद की अवधि में प्राचीन भारत में धार्मिक ग्रंथों में चित्रित उदाहरणों के आधारपर(वेद, उपनिषद, स्मृतियां, रामायण और महाभारत और अन्य धर्मशास्त्र) महिलाओं को पुरुषों के बराबरी का दर्जा हासिल हुआ था। उन्हें समाज में एक सम्मानजनक स्थान दिया गया था। वे स्वतंत्र रूप से सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लिया करती थी। वे महान सभाओं और राजकीय आयोजनों में भाग लिया करती थी। वे वेद और रचित भजनों का अध्ययन किया करती थी। ऋग्वेद में महिलाओं को घर के मामले में पूरी आजादी थी। महिलाओं को सभी अधिकार दिए गए थे। वे नियमित रूपसे सभी अनुष्ठानों में भाग लिया करती थी। धार्मिक अनुष्ठानों में पत्नी के बिना पती सम्मिलित होने से अवैध माना जाता था। संपदा अधिकारों के मामले में पती और पत्नी दोनों संयुक्त रूप से संपत्ति के मालिक हुआ करते थे। इस प्रकार वैदिक काल में महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार थे। उनकी स्थिति काफी अच्छी थी।

वैदिक काल के बाद महिलाओं की स्थिति :-

वैदिक काल के बाद महिलाओं की स्थिति बिगड़ती गई। भारतीय समाज में महिलाओं की स्वतंत्रता में कटौती के लिए यह ईसाई युग था। ब्राम्हणवादी नियमों और आचार संहिता का अधिरोपण, जातिव्यवस्था और संयुक्त परिवार प्रणाली द्वारा लगाए गए कठोर प्रतिबंध इस अवधि में महिलाओं की स्थिति को कमतर करते गये। इस अवधि में भगवान के समक्ष पती और पत्नी दोनों समान थे। इस अवधि में महिलाओं द्वारा घूँट की प्रथा नहीं थी। महिलाएं आर्थिक रूप से भी पुरुषों की मदद किया करती थी। वे कभी-कभी शिकार और कृषि कार्यों में पती या अन्य सदस्यों की मदद किया करती थी।

मध्यकाल :-

11वीं से 18वीं सदी के बीच मुस्लिम संस्कृति के कारण महिलाओं की स्थिति में और भी गिरावट आयी थी। इस अवधि में कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, परदा प्रणाली, सती प्रथा और गुलामी महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करने वाली मुख्य सामाजिक बुराइयां थी। लड़की जन्म अभिशाप, एक बुरे भाग्य के रूप में माना जाता था। वे लगभग अपने घरों के दरवाजे तक ही सिमित थी। शिक्षा, सार्वजनिक मामले आदि में महिलाओं की स्वतंत्रता में कटौती की गई थी। सती प्रथा, पुनर्विवाह निषेध आदि से महिला की स्थिति को खराब कर दिया गया था। अब अगर कुछ बदलाव शहरी शिक्षित महिलाओं में दिखाई दे रहे हैं तो मनुस्मृति और अन्य स्मृतियों द्वारा महिलाओं की नैतिकता निर्धारित की जा रही है।

ब्रिटिश काल :-

18 वीं सदी और 20वीं सदी के बीच में 200 साल ब्रिटिश शासन की अवधि में पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानताओं को दूर करने कुछ प्रगति हुई थी। इसी बीच ब्रिटिश राज का आरंभ हुआ था। परंतु ब्रिटिश शासकों ने भारतीय लोगों के पारंपरिक सामाजिकता में हस्तक्षेप न करने का फैसला लिया था। उन्होंने भारत में महिलाओं की बुरी स्थिति के लिए कोई प्रगतिपरक कदम नहीं उठाए।

राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, केशव चंद्र सेन, स्वामी विवेकानंद, महर्षि कर्वे, न्यायमूर्ति रानडे, महात्मा गांधी और अन्य कई समाज सुधारकों द्वारा कई सुधार किये गये।

19वीं सदी के अंतिम दशकों में, पुरुषों और महिलाओं के दृष्टिकोण में अध्यापिका, नर्सस, डॉक्टर आदि के रूप में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार आदि विषयों में एक उल्लेखनीय परिवर्तन आया। समाज सुधारकों के प्रयासों से महिलाओं की मुक्ति और समाज में अपनी सही स्थान लेने में काफी मदद की।

आजादी के बाद :-

आजादी के बाद महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार आया। महिलाओं की स्थिति में उत्थान के लिए काफी अधिनियम बनाये। ये सभी अधिनियम विवाह, तलाक, संपत्ति और रोजगार से मुख्य रूप से संबंधित है। शादी की उम्र पुरुषों के लिए 21 वर्ष और महिलाओं के लिए 18 कर दी गई। आजादी के बाद एक पत्नीत्व के साथ साथ न्यायिक पृथक्करण, तलाक, विरासत, गोद लेने की प्रथा, पुनर्विवाह और सती उन्मूलन आदि मुख्य विशेषताएं थी। केवल कानूनी या विधायी प्रतिबंध महिलाओं के स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं ला सकते। इस संबंध में बड़ी बाधा अशिक्षा है।

महिलाओं की निरक्षरता 2001 की जनगणना नुसार 45 प्रतिशत और 2011 की जनगणना के नुसार 34 थी। साक्षर महिलाएं अपने अधिकार का उपयोग सही जगह नहीं कर रही। महिलाओं में काफी विशेषताएं होती हैं। उनमें से एक विशेषता उसकी बहु निपुणता है। वह आम तौर पर घर के साथ साथ व्यावसायिक क्षेत्र या कार्यालय में कार्य करती हैं। सरकार को महिलाओं की स्थिति को और सुधारने के लिए और सुरक्षा के कड़े कानून बनाना चाहिए।

::

के. उमादेवी
अ.श्रे. लि.

ये कैसी आजादी

आज हम आजाद भारत की खुली हवा में सांस ले रहे हैं। 200 साल की गुलामी की जंजीर को तोड़ने के लिए देश के कितने सपूतों ने कितनी वीरांगनाओं ने अपने प्राणों की आहुती दी। आजादी के बाद भारत की प्रगति बढ़ती जा रही है। आज हम सभी दिशाओं में आगे बढ़ रहे हैं, दुनिया भी भारत का डंका बजा रही है। आजादी मिलने के बाद भी हमारे समाज में समानता के होते हुए भी कितनी असमानताएं हैं! मैं आज समाज के ऐसे ही वर्ग के बारे में बताना चाहती हूँ।

हम सभी ट्रेन से यात्रा करते हैं, ट्रेन में कई फेरी वाले आते हैं और छोटे – छोटे बच्चे जो 2-3 साल के होते हैं, उनके साथ एक बड़ा बच्चा होता है। ये बच्चे मैले-कुचे कपड़े पहने और चेहरे पर अजीब से रंगों का मेकअप होता है। बड़ा बच्चा गाना गाता है और छोटा बच्चा उस पर कई प्रकार के करतब दिखाता है, करतब दिखाने के बाद वे सबसे पैसे मांगते हैं। अपनी खेलने, पढ़ने की उम्र में ये बच्चे इस तरह से पैसे कमाते हैं। मैंने सोचा इतने छोटे बच्चे ट्रेन में सफर कैसे करते हैं? एक बार मैंने देखा कि दूसरे डिब्बे से एक औरत उतरी और करतब दिखाने वाले बच्चों को ट्रेन से उतारा और उनसे पैसा लेने लगी। तभी मुझे समझ में आया कि यह उनकी मां है।

मैंने एक बार देखा कि करतब दिखाने वाले बच्चों से उनकी मां ने पैसा मांगा, उनके पास पैसा नहीं था तो उनकी मां ने उन्हें खूब मारा। ये कैसे मां बाप हैं जो बच्चों की कमाई पर जीते हैं। इन लोगों पर धिक्कार है। क्या वे बच्चे इसी आजाद भारत के अंग हैं? ये प्रश्न मेरे मन में आता है और मैं यह सोचती हूँ कि, "ये लोग जो बच्चों को इसलिए जन्म देते हैं ताकि उनसे कमाई करवाकर खुद खाएं।" क्या इन लोगों को बदला नहीं जा सकता?

अब मुझे रेल्वे प्लेटफार्म पर जीवन यापन करने वाले उन लावारिस और आवारा बच्चों के बारे में भी बताना है। वे ट्रेन में झाड़ू लगाकर, प्लेटफॉर्म पर खाली बोटलों को एकत्रित कर पैसा कमाते हैं। मैंने देखा है कि ये बच्चे कम उम्र में नशा करते हैं रेल्वे प्लेटफार्म के आसपास ही घूमते हैं।

“हमारे देश में हर वर्ष रेल बजट पास होता है। क्या रेल बजट में प्लेटफार्म पर जीवन यापन करने वाले इन बच्चों के लिए कोई योजना नहीं हो सकती। क्या इनकी उन्नती के लिए कोई उपाय नहीं किए जा सकते।”

हमारे देश में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। हम अपने घर को जिस प्रकार स्वच्छ रखते हैं, हमारे आसपास के स्थानों को स्वच्छ रखने में सहायता नहीं कर सकते। तभी तो हर तरफ गंदगी फैली रहती है। स्वच्छता को लेकर अन्य देश हमें अलग नजरिये से देखते हैं। हम कूड़ा करकट न फैलाने की बात करते हैं, परंतु इस कचरे के ढेर से जीवन यापन करने वाले उन लोगों के बारे में, उन बच्चों के बारे में क्या हम सोचते हैं? नहीं सोचते। आज हम आजाद हैं परंतु आज भी हमारे देश के हजारों बच्चे जो कचरों के ढेर से खाना खोजकर खाते हैं, ये बच्चे इस गंदगी में घूम-घूम कर अपना जीवन जी रहे हैं। हम हमारे बच्चों को किटाणुओं से बचाने के लिए साफ सफाई रखने के लिए हैंडवॉश, सॅनीटाइजर आदि का उपयोग करते हैं। लेकिन इन बच्चों का क्या जिनका रिश्ता ही गंदगी से जुड़ गया है।

मेरी दृष्टि से हमें ट्रेन में भीख मांगने वाले बच्चों को पैसे नहीं देना चाहिए, इन्हें खाना खिलाना चाहिए, खिलौना या बुक देना चाहिए। सरकार द्वारा ऐसी संस्थाएं बनाई जानी चाहिए जो ट्रेन में, प्लेटफॉर्म पर तथा कचरों के ढेर उठाने वाले इन बच्चों को एक अच्छा जीवन स्तर जीने के लिए मार्गदर्शन करें। इन हजारों असहाय बच्चों को जीवन के अंधकार से निकाल कर प्रकाशित करने का प्रयास होना चाहिए। समाज में सभी वर्ग, सभी आयु के लोगों को देश के संविधान में अधिकार दिए गए हैं। उन्हें भी अच्छे से जीने का अधिकार होना चाहिए। इस तरह के सभी बच्चों को भोजन, जल, आवास, शिक्षा आदि मिलने पर ही इतने बलिदानों से प्राप्त स्वतंत्रता सार्थक होगी। सही मायने में हमें आजाद भारत में रहने का गर्व तभी प्राप्त होगा।

तनुश्री दास
पत्नी- राजेश कुमार दास

बचपन

दिन वो मस्त मोला मस्तियों के
जब खुशियों को हमने पुकारा
आंसुओं को हमने नकारा.
मस्त रहते अपनी मस्ती में

चाहे आग लगे बस्ती में.
झूम-झूम कर झूलों की
मस्ती में आता था सावन
हर तरफ मिलता था अपनापन
कुछ इस तरह बीता मेरा बचपन.

पहले खिलौना टूटता था
तो आंसू आते थे
आज दिल टूटता है
तो आंसू आते हैं.

खिलौना तो पापा नया दिलाकर समझा देते थे
पर अब कौन समझाये
दिल का ये दर्द किसे सुनाये.
सच बचपन कितना अच्छा था

बारिश में गीला होना
दिन भर धूल में खेलना
बिना किसी चिंता के
दिन भर घूमते रहना.

माँ को चिंता मेरे खाने की
बहन को चिंता मेरे पढ़ने की
और मुझे पड़ी रहती सिर्फ खेलने की
सच बचपन कितना अच्छा था.

संकलन -पद्मिनि मेनन
आशुलिपिक ग्रेड.।

सफलता के रहस्य

इस संसार में आंख खोलते ही शुरू हो जाता है हमारा जीवन संघर्ष । जीने के लिए, सुविधाओं के लिए व सम्मान के लिए हम लगातार संघर्ष करते रहते हैं, प्रयास करते रहते हैं । अधिकतर लोग अपने बड़े से बड़े लक्ष्य तक पहुंचकर भी स्वयं को असंतुष्ट और तनावग्रस्त पाते हैं ।

जीवन में सफलता प्राप्त करने के कुछ मंत्र प्रकार हैं

- 1 जब काम मिले तभी उसे कर डालिए ।
- 2 अपना अधिकार मांगिए ।
- 3 समस्या में ही समाधान छिपा है ।
- 4 ध्यान से सुनकर सीख, सोच विचारकर सम
- 5 बहाने बनाकर हम किसी और को नहीं बल्कि स्वयं को ही नुकसान पहुंचाते हैं
- 6 सोचिए, निर्णय लीजिए, वही किजिए जो आपके विचार से सही है ।
- 7 अपने आपको जानना ही सफलता की कुंजी है ।
- 8 आप किसी काम में तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक आप उस काम को रूचि से न करें ।
- 9 देखिए कि आपमें कोई कमी और कमजोर पवत्ती तो नहीं है जो कि आपके आपके व्यक्तित्व और लक्ष्यों को बर्बाद कर दें । यदि आप में कोई कमी है तो उस पर ध्यान दें, उस कमजोरी को दूर करें और सिर उंचा कर आगे आगे बढे ।
- 10 स्वयं को कभी नीचा करके मत आंकीए । अपने को अहंकार से नही बल्कि विनमता से समझिए ।

- 11 बीते कल पर चिंता करना छोड दीजिए ।
- 12 उत्साहपूर्वक जिएं । आपके पास जो भी ज्ञान है, उस दूसरों को दिजिए ।
और आप पाएंगे कि आपके पास बहुत कुछ है ।

////////////////////////////////////

छाया ठाकुर
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सामान्यतः उपयोग किये जाने वाले 100 हिंदी शब्दों की सूची
List of 100 most commonly used Hindi words

1	में	meṃ	in, into
2	है	hai	Is
3	हैं	haiṃ	Are
4	नहीं	nahīṃ	no; not
5	लिए	Lie	holding; taking with one
6	गया	gayā	gone; past
7	तथा	tathā	1. conj. and. 2. adv. in the same way as
8	अपने	apne	Ours
9	कुछ	kuch	Something
10	साथ	sāth	1. n. company; something accompanying. 2. adv. with; along; in the company of
11	होता	hotā	Happening
12	था	Thā	Was
13	दिया	diyā	Given
14	हुए	hue	Becoming
15	कोई	koī	Becoming
16	रूप	rūp	form; shape; appearance; aspect
17	से	Se	by means of; by; with
18	मैं	maiṃ	I
19	रहा	rahā	(auxiliary verb)
20	हुआ	huā	became; came about; was
21	बात	bāt	something said, a word, remark; speech, talk, words; conversation; discussion
22	कहा	kahā	something said; a remark; remarks
23	समय	samay	Time
24	क्या	kyā	What
25	अपनी	apnī	her own; hers
26	होती	hotī	Happening
27	प्रकार	prakār	kind; sort; type
28	बहुत	bahut	many; much

29	<u>तरह</u>	tarah	kind; type
30	<u>बाद</u>	bād	speech; discussion, dispute; argument
31	<u>फिर</u>	phir	1. anew, again. 2. thereafter, afterwards; next; then. 3. furthermore; but.
32	<u>रहे</u>	rahe	masculine plural form of continuous aspect auxiliary verb
33	<u>द्वारा</u>	dvārā	by means
34	<u>अधिक</u>	adhik	increased, exceeding; more
35	<u>रही</u>	rahī	(auxiliary verb)
36	<u>होने</u>	hone	Be
37	<u>एवं</u>	evaṃ	1. thus, so. 2. and.
38	<u>हुई</u>	huī	Becoming
39	<u>थे</u>	the	Were
40	<u>उनके</u>	unke	His
41	<u>थी</u>	thī	Was
42	<u>वाले</u>	vāle	used to denote a relationship to the noun, verb, or adjective preceding the postposition
43	<u>चाहिए</u>	cāhie	is wanted (<u>चाहिए को</u> , is wanted by); is needful (to or for); should ought
44	<u>दिन</u>	din	Day
45	<u>लेकिन</u>	lekin	but; however
46	<u>काम</u>	kām	action; act; work; task
47	<u>हूँ</u>	hūṃ	Am

48	होते	hote	Are
49	इसके	iske	of this; for this
50	उन्हें	unhem	to them (dative case)
51	गये	gaye	plural perfective aspect of जाना
52	कभी	kabhī	sometimes; at any time
53	आदि	ādi	et cetera
54	लोग	log	people, folk
55	बार	bār	1. times, occasion. 2. gate, door; doorway.
56	यहाँ	yahām	1. here. 2. At
57	दोनों	donom	the two; both
58	उन्होंने	unhomn e	oblique case of they
59	कार्य	kārya	1. action, act; activity. 2. work, task duty.
60	पास	pās	Nearby
61	वहाँ	vahām	There
62	भारत	bhārat	India
63	लिया	liyā	Taken
64	प्राप्त	prāpt	1. obtained; acquired; incurred. 2. come upon, found.
65	उनकी	unkī	theirs; his (formal)

66	लोगों	logom	people (plural)
67	गयी	gayī	Went
68	लगा	lagā	Seemed
69	अन्य	anya	other; different
70	होगा	hogā	will be
71	इसी	isī	this (emphatic)
72	देश	deś	1. place, region. 2. country; nation
73	यदि	yadi	if; whether
74	सभी	sabhī	every single one; absolutely all
75	नाम	nām	name, title
76	वर्ष	varṣ	a year
77	ऐसा	aisā	of this sort
78	विकास	vikās	opening, expanding
79	अपना	apnā	one's, one's own
80	ऐसे	aise	of this sort
81	दूसरे	dūsare	another; secondly
82	हाथ	hāth	Hand
83	भाषा	bhāṣā	language; speech

84	मेरे	mere	My
85	मैंने	maiṃne	I
86	बीच	bīc	Middle
87	वाली	vālī	1. (added to noun) a person employed in the preceding noun. 2. (added to adjective) adds emphasis to preceding adjective. 3. (added to noun, adjective, or noun phrase) gives adjectival properties to preceding word. 4. (added to verb) gives agentive meaning to preceding verb. Feminine form of वाला .
88	बड़े	baṛe	big; large; great; elder
89	व्यक्ति	vyakti	a person; a particular person
90	उनका	unkā	theirs; his (formal)
91	लिये	liye	took; received; accepted
92	इसलिए	islie	so; therefore
93	तीन	tīn	Three
94	इसका	iskā	his (informal)
95	ऐसी	aisī	of this sort
96	विशेष	viśheṣ	1. particular, special, distinctive. 2. excellent.
97	बड़ी	baṛī	big, large; great
98	अथवा	athvā	Or

संकलन - राजेश कुमार दास,
सहायक खान नियंत्रक एवं हिंदी संपर्क अधिकारी

जीवन की 20 अनमोल बातें आपको बता रहा हूँ!
कृपया 2 मिनट इस पोस्ट को जरूर पढ़ें...

1. जिदंगी मे कभी भी किसी को बेकार मत समझना क्यों
कि बंद पडी घडी भी दिन में दो बार सही समय बताती है।
2. किसी की बुराई तलाश करने वाले इंसान की मिसाल उस 'मक्खी' की तरह है जो सारे
खूबसूरत जिस्म को छोडकर केवल जख्म पर ही बैठती है।
3. टूट जाता है गरीबी मे वो रिश्ता जो खास होता है,
हजारो यार बनते है जब पैसा पास होता है।
4. मुस्करा कर देखो तो सारा जहाँ रंगीन है वर्ना भीगी
पलको से तो आईना भी धुंधला नजर आता है।
5. जल्द मिलने वाली चीजे ज्यादा दिन तक नही चलती और जो चीजे ज्यादा दिन तक
चलती है वो जल्दी नही मिलती
6. बुरे दिनों का एक अच्छा फायदा अच्छे-अच्छे दोस्त
परखे जाते है।
7. बीमारी खरगोश की तरह आती है और कछुए की तरह
जाती है जबकि पैसा कछुए की तरह आता है और खरगोश
की तरह जाता है।
8. छोटी छोटी बातों में आनंद खोजना चाहिए क्योंकि
बड़ी बड़ी बातें तो जीवन मे कुछ ही बार होती है।
9. ईश्वर से कुछ मांगने पर न मिले तो उससे नाराज ना होना क्योंकि ईश्वर वह नही देता
जो आपको अच्छा लगता है
बल्कि वह देता है जो आपके लिए अच्छा होता है।
10. लगातार हो रही असफलताओं से निराश नही होना चाहिए क्योंकि कभी-कभी गुच्छे की
आखिरी चाबी भी ताला खोल देती है।
11. ये सोच है हम इंसानों की कि एक अकेला क्या कर
सकता है पर देख जरा उस सूरज को वो अकेला ही तो
चमकता है।
12. रिश्ते चाहे कितने ही बुरे हो उन्हें तोड़ना मत क्योंकि
पानी चाहे कितना भी गंदा हो अगर प्यास नही बुझा
सकता पर आग तो बुझा सकता है।
13. अब वफा की उम्मीद भी किस से करे भला, मिट्टी के
बने लोग कागजों मे बिक जाते है।

14. इंसान की तरह बोलना न आये तो जानवर की तरह मौन रहना अच्छा है।
15. जब हम बोलना नहीं जानते थे, तो हमारे बोले बिना "माँ" हमारी बातों को समझ जाती थी और आज हम हर बात पर कहते हैं "छोड़ो भी "माँ" आप नहीं समझोगी"।
16. "शुक्रगुजार हूँ उन तमाम लोगों का जिन्होंने बुरे वक्त में मेरा साथ छोड़ दिया क्योंकि उन्हें भरोसा था कि मैं मुसीबतों से अकेले ही निपट सकता हूँ।
17. शर्म की अमीरी से इज्जत की गरीबी अच्छी है।
18. जिदंगी में उतार चढ़ाव का आना बहुत जरूरी है।
क्योंकि ECG में सीधी लाईन का मतलब मौत ही होता है।
19. रिश्ते आजकल रोटी की तरह हो गए जरा सी आंच तेज क्या हुई जल भुनकर खाक हो गए।
20. जिदंगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो "खुद अच्छे बन जाओ" आपसे मिलकर शायद किसी की तलाश पूरी हो जाए।

संकलन - अनिल कुमार सरवदे
आशुलिपिक ग्रेड।

उद्धरण



1. सपने वो नहीं होते जो आप सोते समय देखते हैं, सपने वो हैं जो आपको सोने नहीं देते। **ए.पी.जे.अब्दुल कलाम**
2. भगवान उनकी मदद करते हैं जो कठिण मेहनत करते हैं। **ए.पी.जे.अब्दुल कलाम**
3. जो गुजर गया उसके बारे में मत सोचो और भविष्य के सपने मत देखो केवल वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करो। **गौतम बुद्ध**
4. क्रोध करना एक गर्म कोयले को दूसरे पे फेंकनफेंकने के समान है जो पहले आपका ही हाथ जलाएगा। **गौतम बुद्ध**
5. जितना हम अच्छा सोचेंगे और जितना दूसरों का भला करेंगे उतना ही हमारा हृदय शुद्ध होता जायेगा और उसमें भगवान का निवास होगा। **स्वामी विवेकानंद**
6. सच्ची सफलता, सच्ची खुशी का राज क्या है - जो इंसान बिना किसी स्वार्थपरकता के, बिना कुछ मांगे लोगों की सेवा करता है, वही सच्ची सफलता है। **स्वामी विवेकानंद**
7. कुछ ईमानदार और उर्जावान लोग एक साल में उतना काम कर सकते हैं जितना दूसरे लोग सैकड़ों सालों में नहीं कर सकते। **स्वामी विवेकानंद**
8. व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं अपितु उसके चरित्र से आंकी जाती है। **महात्मा गांधी**
9. अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने समान है जो धरातल की सतह को चमकदार और साफ कर देती है। **महात्मा गांधी**
10. चलिए सुबहका पहला काम ये करें कि इस दिन के लिए संकल्प करें कि: मैं दुनिया में किसी से डरूंगा नहीं। मैं केवल भगवान से डरूंगाडरूंगा। मैं किसी के प्रति बुरा भाव ना रखू।

में किसी के अन्याय के समक्ष झुकु नहीं। मैं असत्य को सत्य से जीतु। और असत्य का विरोध करते हुए, मैं सभी कष्टों को सह सकूं। **महात्मा गांधी**

11. अकलमंद काम करने से पहले सोचता है और मूर्ख काम करने के बाद । **महात्मा गांधी**
12. ईमानदारी एक बहुमूल्य उपहार है, घटिया लोगों से उसकी अपेक्षा न करें।
13. जो आपकी आंखों ने नहीं देखा उस बात के लिए अपने कानों पर विश्वास न करें, जो आपका दिल महसूस नहीं करता वो बात अपने मुंह से न निकलने दें। एक ईमानदारी का जीवन जीए।
14. इज्जत कमाई जाती है। ईमानदारी सराही जाती है। प्यार पाया जाता है और निष्ठा लौटाई जाती है।
15. कोई भी पैत्रिक संपत्ति ईमानदारी के बराबर अमीर नहीं है।
16. झूठी निंदा एक ईमानदार व्यक्ति को नष्ट नहीं कर सकती जैसे बाढ़ आने के बाद भी शिला अपने स्थान पर ही रहती है।

संकलन -

के.आर.वि.एस. साई रितेश, 9वीं कक्षा
पुत्र - के. उमा देवी

कविता

"तारों को गिननेवाले हम न थे
अकेले गुनगुनानेवाले हम न थे
यह तो आपके दोस्ती ने आदत डाल दी
वरना किसी को इतना याद करनेवाले हम न थे"

.....

मुस्कान आपकी यादों से मिलती थी
दिल को राहत आपकी बातों से मिलती थी
यह दोस्ती का सिलसिला अगले जनम में भी रहे
दिल की धडकन आपकी दोस्ती से ही चलती रहे

"तारों को गिननेवाले हम न थे
अकेले गुनगुनानेवाले हम न थे
यह तो आपके दोस्ती ने आदत डाल दी
वरना किसी को इतना याद करनेवाले हम न थे"

.....

मुस्कान आपकी यादों से मिलती थी
दिल को राहत आपकी बातों से मिलती थी
यह दोस्ती का सिलसिला अगले जनम में भी रहे
दिल की धडकन आपकी दोस्ती से ही चलती रहे

सरोजकुमार
कनिष्ठ सर्वेअर

स्लोगन

1. वन संपदा है जहां, तन्दुरस्ती है वहां।
2. पेड़ पौधों का वरदान, शीतल शुद्ध वायु प्रदान।
3. बंजर धरती करे पुकार, वृक्ष लगाकर करो उपकार।
4. बात कहते हैं ऋषि-मुनि ज्ञानी, पेड़ काटो तो गिरता नहीं पानी।
5. पर्यावरण प्रदूषण भगाना है, जगह-जगह पर पेड़ लगाना है।
6. धरती की है यही पुकार, वृक्ष लगाकर करो श्रृंगार।
7. वृक्ष धरती का आभूषण, करता है दूर जो प्रदूषण।
8. वृक्ष देते स्वच्छ वायु, सुखी जीवन लंबी आयु।
9. खत्म हुई जो पेड़ की छाया, खा जायेगी काल की काया।
10. वृक्ष के है ये उपकार, मिट्टी, पानी और बहार।
11. यदि वातावरण बचाना है, तो वन विस्तार बढ़ाना है।

.....

श्रीमती सी.एच.सुशीला, स.ख.भू.

सुविचार

आपकी धारणाएँ आपके विचार बन जाते हैं,
 आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं,
 आपके शब्द आपके कर्म बन जाते हैं,
 आपके कर्म आपकी आदतें बन जाती हैं,
 आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं,
 और आपके मूल्य आपकी तकदीर बन जाती हैं ।

— महात्मा गांधी

सरोजकुमार
कनिष्ठ सर्वेअर

— निदा फाजली का शेर

सफर में धूप तो होगी, जो चल सको तो चलो ।
 सभी हैं भीड़ में, तुम भी निकल सको तो चलो ।।
 किसी के वास्ते राहें कहां बदलती हैं ।
 तुम अपने आपको खुद ही बदल सको तो चलो ।
 यहां किसी को कोई रास्ता नहीं देता ।
 मुझे गिराकर अगर तुम संभल सको तो चलो ।
 यही है जिंदगी, कुछ ख्वाब, चंद उम्मीदें ।
 इन्हीं खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो ।।

— वसीम बरेलवी का शेर

कौन सी बात कहाँ कैसे कही जाती है

ये सलीका हो तो हर इक बात सुनी जाती है

संकलन - अनिल कुमार सरवदे
 आशुलिपिक ग्रेड ।

पद

दंत कहे जीभकु ॥ की हम बत्तीस तु अकेली माय ।
 एकबार चाव जाउ तो ॥ फिर्यादी कहां जाय ।
 जीभ कहे दंतकु । तुम बत्तीस मैं हो अकेली माय ।
 एकबार तेढी चलूं तो ॥ बत्तीसी गिरी जाय ॥

संत कबीर

कोयल काको देत है कागा कासो लेत ।
 तुलसी मीठे वचन से जग अपनो करिलेत ।

संत तुलसीदास

ऐसी बानी बोलिए,
 मन का आपा खोय
 औरनको शीतल करैं
 आपहु शीतल होय ॥
 —संत कबीर

जब अपना मुँह खोलो तुम
 मीठी बोली बोलो तुम
 जग में इज्जत पाओगे,
 बहुत नेक कहलाओगे ॥

— हिंदी कविता

संकलन - अनिल कुमार सरवदे
 आशुलिपिक ग्रेड.।

पद

विद्या भागकारी यशः सुखकारी विद्या गुरुणां गुरु ।

विद्या बन्धुजनों विदेशगमने विद्या परा देवता

विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

अर्थात् – वास्तव में केवल ज्ञान ही मनुष्य को सुशोभित करता है, यह ऐसा अद्भूत खजाना है जो हमेशा सुरक्षित और छिपा रहता है, इसी के माध्यम से हमें गौरव ओर सुख मिलता है । ज्ञान ही सभी शिक्षकों का शिक्षक है। विदेशों में विद्या हमारे बंधुओं और मित्रों की भूमिका निभाती है। ज्ञान ही सर्वोच्च सत्ता है। राजा-महाराजा भी ज्ञान को ही पूजते व सम्मानित करते हैं न की धन को। विद्या और ज्ञान के बिना मनुष्य केवल एक पशु के समान है।

+++++

सरोजकुमार
कनिष्ठ सर्वेअर

हिंदी पखवाड़े का आयोजन - रिपोर्ट

दि. 01-09-2015 से 15-09-2015 तक

दि. 01-09-2015 से 15-09-2015 तक इस कार्यालय में हिंदी पखवाड़े कर आयोजन किया गया। पखवाड़े का उद्घाटन समारोह दि. 01-09-2015 को श्री. पी. एन. शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक महोदय की अध्यक्षता में किया गया। उद्घाटन समारोह के अवसर पर सर्वप्रथम श्री. आर. के. दास, सहायक खान नियंत्रक एवं हिंदी संपर्क अधिकारी द्वारा अध्यक्ष महोदय एवं सभा में उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जानेवाले कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं की जानकारी दी और उनके द्वारा सभी से आग्रह किया गया कि पखवाड़े के दौरान किये जानेवाले प्रतियोगिता में सभी बढ़चढ़ कर भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय श्री. पी. एन. शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि, भारत सरकार ने प्रोत्साहन के तौर पर हिंदी भाषा को आगे आगे बढ़ाने की नीति बनाई है। अतः सरकारी कर्मचारी होने के नाते हम सबका कर्तव्य है कि इसी नीति को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा हिंदी को बढ़ावा दें। सिर्फ पखवाड़े के दौरान ही नहीं बल्कि हमेशा मुख्य रूपसे हिंदी में कार्य करें। उन्होंने यह भी कहा कि पत्राचार में हिंदी के अग्रोषण पत्र का उपयोग न करते हुए मूल पत्र ही हिंदी में भेजे जाने चाहिए। उनके द्वारा यह भी बताया गया कि ही में संसदीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा इस कार्यालय का निरीक्षण किया गया। उन्होंने निरीक्षण से संबंधित अपने अनुभव सभी के बीच बांटे। इसी तरह प्रोत्साहन युक्त संबोधन के श्री. आर. के. दास द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया और साथ ही उद्घाटन समारोह का समापन हुआ।

पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

क्र.सं.	दिनांक	प्रतियोगिता	प्रतिभागियों की संख्या
1.	2-9-2015	निबंध प्रतियोगिता	6
2.	4-9-2015	वाद-विवाद प्रतियोगिता	21
3.	7-9-2015	टिप्पण पत्रलेखन प्रतियोगिता	13

4.	9-9-2015	तत्काल भाषण प्रतियोगिता	18
5.	11-9-2015	अनुवाद प्रतियोगिता	16
6.	14-9-2015	प्रश्नमंच प्रतियोगिता	22

दि. 15-09-2015 को श्री. पी. एन. शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक महोदय की अध्यक्षता में 'हिंदी पखवाड़े' के समापन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए श्री. आर. के. दास, सहायक खान नियंत्रक एवं हिंदी संपर्क अधिकारी ने सभी का स्वागत किया और सभा सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने हिंदी के प्रति सभी की रुचि को दर्शाते हुए कहा कि इस वर्ष हिंदी हिंदी पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं में अधिकतर अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया और सभी का उत्साह बढ़ाते हुए यह आशा की कि इसी तरह हिंदी में कार्य के प्रति अपना उत्साह बनाए रखे। उपरान्त कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री. पी. एन. शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक ने सभा को संबोधित किया। हिंदी में कार्य के प्रति सभी की रुचि को देखते हुए हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने कहा, हिंदी हमारी राजभाषा है। राजभाषा का सम्मान करना हम सभी का कर्तव्य है। इसी सम्मान के तहत हम अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें।

तत्पश्चात पखवाड़े के दौरान आयोजित किए गए प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अध्यक्ष महोदय के शुभहस्ते पुरस्कार प्रदान किए गए। विजेताओं द्वारा निम्नानुसार पुरस्कार प्राप्त किए गए।

निबंध प्रतियोगिता

- प्रथम - श्री. ए. पी. सरवदे, आशुलिपि ग्रेड -
द्वितीय - श्री. ए. वी. रमेश कुमार, सहायक खनन भूविज्ञानी
तृतीय - श्री के. प्रकाशम् पन्तुलु, कार्यालय अधीक्षक

टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता

- प्रथम - कु. पी. वी. गीता, उच्च श्रेणी लिपिक
द्वितीय - श्री. ए. पी. सरवदे, आशुलिपि ग्रेड -
तृतीय - श्रीमती एन. उमा देवी, अवर श्रेणी लिपिक

अनुवाद प्रतियोगिता

- प्रथम - श्रीमती एस. पदमावति, उच्च श्रेणी लिपिक
द्वितीय - श्री. सरोज कुमार, कनिष्ठ सर्वेअर
तृतीय - श्री. वी. श्रीनिवास राव, उच्च श्रेणी लिपिक

तत्काल भाषण प्रतियोगिता

- प्रथम - श्री. डी. दाश, वरिष्ठ खनन भूविज्ञानी
 द्वितीय - श्रीमती सी. एच. सुशीला, सहायक खनन भूविज्ञानी
 तृतीय - श्री. सी.एस.वी.एन. मूर्ति, कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी एवं
 श्री. आर तिमोथी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक(नक्शा.)

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

प्रथम ---

- श्री. डी. दाश, व.ख.भू.
 श्री. शीवा प्रसाद, व.त.स.(खा.)
 श्रीमती पद्मिनी मेनन,आशु.ग्रेड-
 श्री.बी.रामाकृष्णा,व.त.स.(नक्शा.)
 श्री. एस. लक्ष्मीनारायणा, स्टा.का.ड्रा.ग्रेड-
 श्री. डी. नरसिम्हा, एम.टी.एस.

द्वितीय ----

- श्रीमती सी.एच.सुशीला,स.ख.भू.
 श्रीमती एस.पदमावति, उ.श्रे.लि.
 श्रीमती एन.उमादेवी,अ.श्रे.लि.
 श्री. पी. गुरुवय्या,स.ख.भू.
 श्री.एम.राजकुमार,एम.टी.एस.

सांत्वना पुरस्कार

- श्रीमती वी. लक्ष्मी, आशु.ग्रेड-
 श्री. डी. विजय कुमार, उ.श्रे.लि.
 श्रीमती एस. तुलसीबाई, एम.टी.एस.
 श्री. बी. कृष्णा, एम.टी.एस.
 श्री. प्रभुलाल, एम.टी.एस.

अंत में श्री. आर. के. दास, सहायक खान नियंत्रक एवं हिंदी संपर्क अधिकारी द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह संपन्न हुआ।



छाया ठाकुर, व.हिं.अ.

वर्ष 2015-16 के लिए राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन से संबंधित रिपोर्ट

राजभाषा नीति के अनुसार हिन्दी कार्य के कार्यान्वयन हेतु हैदराबाद सतत प्रयासरत है । शासकीय कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु श्री पी. एन. शर्मा , क्षेत्रीय खान नियंत्रक के नेतृत्व और मार्गदर्शन में कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का कार्य उत्साहपूर्ण रूप में किया जाता है । वर्ष 2015-16 के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, भारतीय खान ब्यूरो , हैदराबाद की गतिविधियां निम्नानुसार निम्नानुसार है ।

1. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

क्षेत्रीय खान नियंत्रक की अध्यक्षता में प्रत्येक तिमाही में इस कार्यालय में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की गई । प्रत्येक बैठक में हिन्दी प्रगति के कार्य से संबन्धित समीक्षा की जाती है साथ ही हिन्दी कार्य की प्रगति हेतु उचित कार्यवाई की जाती है ।

2. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्र सरकार) हैदराबाद की बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हैदराबाद-सिकंदरबाद की बैठकों में इस क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा नियमित रूप से भाग लिया जाता है । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तहत वर्ष 2015-16 में संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति का दि. 22.08.2015 22.08.2015 को विचार- विमर्श कार्यक्रम आयोजित हुआ । इस बैठक में अन्य कार्यालयों सहित भारतीय खान ब्यूरो के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा भी भाग लिया गया । इस बैठक में डॉक्टर पी.के.जैन, अधीक्षण खनन भूविज्ञानी एवं राजभाषा अधिकारी और श्री पी. एन. शर्मा, शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक ने भाग लिया। संसदीय सदस्यों द्वारा इस क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी में हो रहे कार्य की समीक्षा की गई । समीक्षा के उपरांत कार्यालय में हो रहे हिन्दी प्रगति कार्य की सराहना की गई ।

3. हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट

हिन्दी की तिमाही में हिन्दी कार्य से संबंधित रिपोर्ट बनाकर नियमित रूप से राजभाषा अधिकारी , भा . खान . ब्यूरो , क्षेत्रीय कार्यालय , गृह मंत्रालय , बंगलुरु एवं नराकास, हैदराबाद को भेजी गई ।

1. हिन्दी पखवाडे का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय , भा . खान . ब्यूरो, हैदराबाद में दि. 01.09.2015 से 15.09.2015 तक हिन्दी पखवाडे का आयोजन किया गया । श्री पी . एन . शर्मा , क्षे . खा. नि . की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया । इस पखवाडे दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे , हिन्दी निबंध , हिन्दी टिप्पणी / आलेख , हिन्दी टंकण , तात्कालिक भाषण , वाद - विवाद एवं हिन्दी प्रस्नमंच आदि आयोजित किया किया गया । श्री पी. एन. शर्मा , क्षेत्रीय खान नियंत्रक की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथी के शुभहस्ते प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये ।

2. तकनीकी एवं प्रशासनिक पत्रों का अनुवाद

मुख्यालय से प्राप्त खान मंत्रालय के तकनीकी अनुवाद जैसे ,

- बजट निष्कर्ष 2015-16
- भारतीय खान ब्यूरो की वार्षिक रिपोर्ट का अध्याय 6
- खानों के निरीक्षण के मापदंड से संबंधित हिन्दी वेबसाइट हेतु अनुवाद कार्य ।
- परित्यक्त लागत से संबंधित वित्तीय आश्वासन और दस्तावेज़ की प्रस्तुती ।

उपरोक्त के इस क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य तकनीकी एवं प्रशासनिक पत्रों / दस्तावेजों का समय पर किया गया ।

6. प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिन्दी शिक्षण योजना हैदराबाद के अंतर्गत इस क्षेत्रीय कार्यालय के दो कर्मचारियों को प्रबोध प्रबोध एवं प्रवीण के प्रशिक्षण हेतु नामित किया गया और उन्होंने प्रशिक्षण पा लिया ।

हिन्दी शिक्षण योजना हैदरबाद द्वारा कम्प्युटर पर हिन्दी के आई टी टूल्स के 5 दिवसीय प्रक्षीण कार्यक्रम अलग अलग सत्र में निम्न कर्मचारी को नामित किया गया ।

1 श्री. अनिल सर्वदे , आशुलिपिक ग्रेड - 1

2 श्री. डी . विजया कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक

3. श्रीमति . के . उमा देवी , अवर श्रेणी लिपिक

को “ कम्प्युटर ऑफर हिन्दी में काम करने के लिये बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रशिक्षण हेतु भेजा गया । इसके अतिरिक्त इस क्षेत्रीय कार्यालय के 22 अधिकारी / कर्मचारियों को पारंगत के प्रशिक्षण हेतु भेजा गया । इनमे 17 कर्मिक परीक्षा में उपस्थित हुए और सभी ने अच्छे अंकोमे परीक्षा उत्तीर्ण की

7. हिन्दी कार्यशाला

इस क्षेत्रीय कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । प्रत्येक कार्यशाला में 7 से 8 अधिकारी अवम कर्मचारी को नामित किया गया । श्रीमति छाया ठाकुर, ठाकुर, व.हि.अ। द्वारा विभिन्न संबन्धित विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत कर अभ्यास करवाया गया । जनवरी से मार्च 2016 के तिमाही में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला में सभी अधिकारी एवं कर्मचारियो ने भाग लिया । इस कार्यशाला में व्यखान हेतु बाहरी व्याख्यातावों को भी आमंत्रित किया किया गया और उनके द्वारा व्यखान प्रस्तुत कर अभ्यास भी करवाया गया ।

8. धारा 3(3) का अनुपालन

क्षेत्रीय खान नियंत्रक महोदय के मार्गदर्शन में कार्यालय द्वारा धारा 3(3) का अनुपालन पूरी निष्ठा से किया जा रहा है ।

9. हिंदी प्रोत्साहन

यह हर्ष का विषय है की वर्ष 2014-15 के लिया कार्यालय के निम्न 5 कर्मचारियों को हिंदी कार्य करने हेतु मुख्यालय से पुरस्कृत किया गया ।

1. श्री. वी. श्रीनिवास राव , ऊच्च श्रेणी लिपिक
2. श्रीमति. एस. पदमवाती, अवर श्रेणी लिपिक
3. श्री. डी . विजया कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक
4. कु. पी. वी. गीता, उच्च श्रेणी लिपिक
5. श्रीमति. के. उमा देवी , अवर श्रीनि लिपिक

2015 – 16 के दौरान हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय में हुई

विभिन्न गतिविधियां - झलकियां

- ❖ दि.22-06-2015 से 26-06-2015 तक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। प्रथम दिन बैठक का आयोजन किया गया। श्री. पी. एन. शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक द्वारा स्वच्छता की उपयोगिता बताई गई। पूरे सप्ताह में प्रतिदिन एक घंटा प्रत्येक कर्मिकों द्वारा कार्यालय परिसर में स्वच्छता के उपरान्त कार्यालयीन कार्य की शुरुआत की गई। इस तरह स्वच्छता अभियान सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।
- ❖ दि. 20-08-2015 को "सद्भावना दिवस" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री. पी.एन.शर्मा, पी.एन.शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक द्वारा हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सद्भावना की शपथ दिलवाई गई।
- ❖ दि. 01-09-2015 से 15-09-2015 तक "हिंदी पखवाड़े" का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। समापन समारोह में सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गये।
- ❖ दि. 30-10-2015 को "राष्ट्रीय एकता दिवस" के अवसर पर श्री. पी. एन. शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक द्वारा हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सद्भावना की शपथ दिलवाई गई।
- ❖ दि. 26-10-2015 से 31-10-2015 तक "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह के अवसरपर बैनर और पास्टर प्रदर्शित किए गए। श्री. पी. एन. शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक द्वारा ईमानदारी और पारदर्शिता की प्रतिज्ञा दिलवाई गई और हमारे दैनंदिन कार्यालयीन कार्य एवं जीवन के सभी क्षेत्रों से भ्रष्टाचार उन्मुलून पर बल देते हुए सभी को संबोधित किया। सप्ताह के दौरान प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।
- ❖ दि. 21-01-2016 को भारतीय खान ब्यूरो और राष्ट्रीय सुदुर संवेदी केंद्र के मध्य समझौता पर हस्ताक्षर कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- ❖ दि. 06-05-2016 ग्रैनाइट विकास परिषद की उप समिति की बैठक का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दस बैठक में आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना सरकार और खान मंत्रालय के साथ ग्रैनाइट विकास के विभिन्न मामलों पर समझौता किया गया।
- ❖ दि. 01-03-2016 को कार्यालय परिसर में "खनिज दिवस" समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री. डी. दास, वरिष्ठ खनन भूविज्ञानी द्वारा तकनीकी व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। साथ ही "रक्तदान शिविर" का आयोजन किया गया। उपरान्त प्रश्नमंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



“ खनिज दिवस ” के अवसर पर श्री पीयूष नारायण शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक रक्तदान करते हुए।



“ खनिज दिवस” के अवसर पर रक्तदान हेतु पंजीकरण करते हुए विभाग की महिलाएं।



“ हिंदी पखवाड़ा” समापन समारोह के अवसरपर श्री. पी. एन. शर्मा, क्षेत्रीय खान नियंत्रक, अध्यक्ष पद पर एवं श्री. आर. के. दास, सहायक खान नियंत्रक एवं संपर्क अधिकारी सभा को संबोधित करते हुए।



सी.जी.ओ. टॉवर में हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय, भारतीय खान ब्यूरो के नये कार्यालय का उद्घाटन करते हुए श्री. आर. एच. ख्वाजा, सचिव, खान मंत्रालय, भारत सरकार ।



भारतीय खान ब्यूरो और राष्ट्रीय सुदूर संवेदी केंद्र के मध्य समझौता हस्ताक्षर के उपरान्त ए.के.सिन्हा, महानियंत्रक, भा.खा.ब्यूरो और श्री. एन.के.सिंग, संयुक्त सचिव, खान मंत्रालय एवं अन्य।

